http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&booktype=free

यह पुस्तक हिन्दी व्याकरण ज्ञान की प्रवेशिका है। आशा है कि पाठकगण इसका समुचित लाभ उठा पायेंगे। यदि आप इस पृष्ठ पर कोई त्रुटि देखें तो हमे अवश्य लिखें ताकि भूल सुधार करके सही ज्ञान पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। - धन्यवाद

व्याकरण बोध तथा रचना

विषयानुक्रमणिका

1.	भाषा, व्याकरण और बोली
2.	वर्ण-विचार
3.	शब्द-विचार
4.	पद-विचार
5.	संज्ञा के विकारक तत्व
6.	वचन
7.	कारक
8.	सर्वनाम
9.	विशेषण
10.	क्रिया
11.	काल
12.	वाच्य
13.	क्रिया-विशेषण
14.	सम्बन्धबोधक अव्यय
15.	समुच्चयबोधक अव्यय
16.	विस्मयादिबोधक अव्यय

17.	शब्द-रचना
18.	प्रत्यय
19.	सधि
20.	समास
21.	पद-परिचय
22.	शब्द-ज्ञान
23.	विराम-चिह्न
24.	वाक्य-प्रकरण
25.	अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप
26.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=1&booktype=free#1.

अध्याय 1

1.भाषा, व्याकरण और बोली

परिभाषा- भाषा अभिव्यक्ति का एक ऐसा समर्थ साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार जाना सकता है। सम्सार में अनेक भाषाएँ हैं। जैसे-हिन्दी,सम्स्कृत,अग्रेजी, बँगला,गुजराती,पम्जाबी,उर्दू, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, फ्रैंच, चीनी, जर्मन इत्यादि।

भाषा के प्रकार- भाषा दो प्रकार की होती है-

1. मौखिक भाषा।
2. लिखित भाषा।

आमने-सामने बैठे व्यक्ति परस्पर बातचीत करते हैं अथवा कोई व्यक्ति भाषण आदि द्वारा अपने विचार प्रकट करता है तो उसे भाषा का मौखिक रूप कहते हैं। जब व्यक्ति किसी दूर बैठे व्यक्ति को पत्र द्वारा अथवा पुस्तकों एव□पत्र-पत्रिकाओ□में लेख द्वारा अपने विचार प्रकट करता है तब उसे भाषा का लिखित रूप कहते हैं।

व्याकरण

मनुष्य मौखिक एव□लिखित भाषा में अपने विचार प्रकट कर सकता है और करता रहा है किन्तु इससे भाषा का कोई निश्चित एव□शुद्ध स्वरूप स्थिर नही□हो सकता। भाषा के शुद्ध और स्थायी रूप को निश्चित करने के लिए नियमबद्ध योजना की आवश्यकता होती है और उस नियमबद्ध योजना को हम व्याकरण कहते हैं।

परिभाषा- व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा किसी भी भाषा के शब्दों और वाक्यों के शुद्ध स्वरूपों एव□ शुद्ध प्रयोगों का विशद ज्ञान कराया जाता है।
भाषा और व्याकरण का सबन्ध- कोई भी मनुष्य शुद्ध भाषा का पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना प्राप्त नही□कर सकता। अतः भाषा और व्याकरण का घनिष्ठ सबन्ध हैं वह भाषा में उच्चारण, शब्द-प्रयोग, वाक्य-गठन तथा अर्थों के प्रयोग के रूप को निश्चित करता है।

व्याकरण के विभाग- व्याकरण के चार अग निर्धारित किये गये हैं-
1. वर्ण-विचार।
2. शब्द-विचार।
3. पद-विचार।
4. वाक्य विचार।

बोली

भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है। अर्थात् देश के विभिन्न भागों में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है और किसी भी क्षेत्रीय बोली का लिखित रूप में स्थिर साहित्य वहाँ की भाषा कहलाता है।

लिपि

किसी भी भाषा के लिखने की विधि को ‘लिपि’ कहते हैं। हिन्दी और सम्कृत भाषा की लिपि का नाम देवनागरी है। अग्रेजी भाषा की लिपि ‘रोमन’, उर्दू भाषा की लिपि ारसी, और पजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी है।

साहित्य

ज्ञान-राशि का सचित कोश ही साहित्य है। साहित्य ही किसी भी देश, जाति और वर्ग को जीवत रखने का- उसके अतीत रूपों को दर्शाने का एकमात्र साक्ष्य होता है। यह मानव की अनुभूति के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट करता है और पाठकों एवश्रोताओके हृदय में एक अलौकिक अनिर्वचनीय आनद की अनुभूति उत्पन्न करता है।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=2&booktype=free

अध्याय 2

वर्ण-विचार

परिभाषा-हिन्दी भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। जैसे-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, क्, ख् आदि।

वर्णमाला

वर्णों के समुदाय को ही वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में 44 वर्ण हैं। उच्चारण और प्रयोग के आधार पर हिन्दी वर्णमाला के दो भेद किए गए हैं-

1. स्वर
2. व्यजन

स्वर

जिन वर्णों का उच्चारण स्वतत्र रूप से होता हो और जो व्यजनों के उच्चारण में सहायक हों वे स्वर कहलाते है। ये सख्या में ग्यारह हैं-

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

उच्चारण के समय की दृष्टि से स्वर के तीन भेद किए गए हैं-

1. ह्रस्व स्वर।
2. दीर्घ स्वर।
3. प्लुत स्वर।

1. ह्रस्व स्वर

जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता हैं उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये चार हैं- अ, इ, उ, ऋ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

2. दीर्घ स्वर

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये हिन्दी में सात हैं- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
विशेष- दीर्घ स्वरों को ह्रस्व स्वरों का दीर्घ रूप नही□समझना चाहिए। यहाँ दीर्घ शब्द का प्रयोग उच्चारण में लगने वाले समय को आधार मानकर किया गया है।

3. प्लुत स्वर

जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्रायः इनका प्रयोग दूर से बुलाने में किया जाता है।

मात्राएँ

स्वरों के बदले हुए स्वरूप को मात्रा कहते हैं स्वरों की मात्राएँ निम्नलिखित हैं-

स्वर मात्राएँ शब्द
अ × कम
आ ा काम
इ ि किसलय
ई ी खीर
उ ु गुलाब
ऊ ू भूल
ऋ ृ तृण

ए े केश
ऐ ै है
ओ ो चोर
औ ौ चौखट
अ वर्ण (स्वर) की कोई मात्रा नही होती। व्यञ्जनों का अपना स्वरूप निम्नलिखित हैं-
क् च् छ् ज् झ् त् थ् ध् आदि।
अ लगने पर व्यञ्जनों के नीचे का (हल) चिह्न हट जाता है। तब ये इस प्रकार लिखे जाते हैं-
क च छ ज झ त थ ध आदि।

व्यञ्जन

जिन वर्णों के पूर्ण उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है वे व्यञ्जन कहलाते हैं। अर्थात व्यञ्जन बिना स्वरों की सहायता के बोले ही नही जा सकते। ये संख्या में 33 हैं। इसके निम्नलिखित तीन भेद हैं-

1. स्पर्श
2. अन्तःस्थ
3. ऊष्म

1. स्पर्श

इन्हें पाँच वर्गों में रखा गया है और हर वर्ग में पाँच-पाँच व्यञ्जन हैं। हर वर्ग का नाम पहले वर्ग के अनुसार रखा गया है जैसे-

कवर्ग- क् ख् ग् घ् ङ्
चवर्ग- च् छ् ज् झ् ञ्
टवर्ग- ट् ठ् ड् ढ् ण् (ड़् ढ़्)
तवर्ग- त् थ् द् ध् न्
पवर्ग- प् फ् ब् भ् म्

2. अन्तःस्थ

ये निम्नलिखित चार हैं-
य् र् ल् व्

3. ऊष्म

ये निम्नलिखित चार हैं-
श् ष् स् ह्

वैसे तो जहाँ भी दो अथवा दो से अधिक व्यञ्जन मिल जाते हैं वे सयुक्त व्यञ्जन कहलाते हैं, किन्तु देवनागरी लिपि में सयोग के बाद रूप-परिवर्तन हो जाने के कारण इन तीन को गिनाया गया है। ये दो-दो व्यञ्जनों से मिलकर बने हैं। जैसे-क्ष=क्+ष अक्षर, ज्ञ=ज्+ञ ज्ञान, त्र=त्+र नक्षत्र कुछ लोग क्ष् त्र् और ज्ञ् को भी हिन्दी वर्णमाला में गिनते हैं, पर ये सयुक्त व्यञ्जन हैं। अतः इन्हें वर्णमाला में गिनना उचित प्रतीत नहीं होता।

अनुस्वार

इसका प्रयोग पञ्चम वर्ण के स्थान पर होता है। इसका चिन्ह (ं) है। जैसे- सम्भव=सम्भव, सञ्जय=सञ्जय, गङ्गा=गङ्गा।

विसर्ग

इसका उच्चारण ह् के समान होता है। इसका चिह्न (:) है। जैसे-अतः, प्रातः।

चन्द्रबिन्दु

जब किसी स्वर का उच्चारण नासिका और मुख दोनों से किया जाता है तब उसके ऊपर चन्द्रबिन्दु (ँ) लगा दिया जाता है।
यह अनुनासिक कहलाता है। जैसे-हँसना, आँख।

हिन्दी वर्णमाला में 11 स्वर तथा 33 व्यञ्जन गिनाए जाते हैं, परन्तु
इनमें ड़, ढ़ अं तथा अः जोड़ने पर हिन्दी के वर्णों की कुल सख्या 48 हो जाती है।

हलन्त

जब कभी व्यञ्जन का प्रयोग स्वर से रहित किया जाता है तब उसके नीचे एक तिरछी रेखा (्) लगा दी जाती है। यह रेखा हल कहलाती है। हलयुक्त व्यञ्जन हलन्त वर्ण कहलाता है। जैसे-विद् या।

वर्णों के उच्चारण-स्थान

मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण होता है उसे उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं।

उच्चारण स्थान तालिका

क्रम	वर्ण	उच्चारण	श्रेणी
1.	अ आ क् ख् ग् घ् ङ् ह्	विसर्ग कण्ठ और जीभ का निचला भाग	कण्ठस्थ
2.	इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श	तालु और जीभ	तालव्य
3.	ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् ड़् ढ़् र् ष्	मूर्धा और जीभ	मूर्धन्य
4.	त् थ् द् ध् न् ल् स्	दाँत और जीभ	दन्त्य
5.	उ ऊ प् □ ब् भ् म	दोनों होंठ	ओष्ठ्य
6.	ए ऐ	कण्ठ तालु और जीभ	कण्ठतालव्य
7.	ओ औ	दाँत जीभ और होंठ	कण्ठोष्ठ्य
8.	व्	दाँत जीभ और होंठ	दन्तोष्

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=3&booktype=free

अध्याय 3

शब्द-विचार

परिभाषा- एक या अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि शब्द कहलाता है। जैसे- एक वर्ण से निर्मित शब्द-न (नही) व (और) अनेक वर्णों से निर्मित शब्द-कुत्ता, शेर,कमल, नयन, प्रासाद, सर्वव्यापी, परमात्मा।

शब्द-भेद

व्युत्पत्ति (बनावट) के आधार पर शब्द-भेद-
व्युत्पत्ति (बनावट) के आधार पर शब्द के निम्नलिखित तीन भेद हैं-
1. रूढ़
2. यौगिक
3. योगरूढ़

1. रूढ़

जो शब्द किन्ही अन्य शब्दों के योग से न बने हों और किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हों तथा जिनके टुकड़ों का कोई अर्थ नही होता, वे रूढ़ कहलाते हैं। जैसे-कल, पर। इनमें क, ल, प, र का टुकड़े करने पर कुछ अर्थ नही हैं। अतः ये निरर्थक हैं।

2. यौगिक

जो शब्द कई सार्थक शब्दों के मेल से बने हों,वे यौगिक कहलाते हैं। जैसे- देवालय=देव+आलय, राजपुरुष=राज+पुरुष, हिमालय=हिम+आलय, देवदूत=देव+दूत आदि। ये सभी शब्द दो सार्थक शब्दों के मेल से बने हैं।

3. योगरूढ़

वे शब्द, जो यौगिक तो हैं, किन्तु सामान्य अर्थ को न प्रकट कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं। जैसे-पङ्कज, दशानन आदि। पङ्कज=पङ्क+ज (कीचड़ में उत्पन्न होने वाला) सामान्य अर्थ में प्रचलित न होकर कमल के अर्थ में रूढ़ हो गया है। अतः पङ्कज शब्द योगरूढ़ है। इसी प्रकार दश (दस) आनन (मुख) वाला रावण के अर्थ में प्रसिद्ध है।

उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के निम्नलिखित चार भेद हैं-

1. तत्सम- जो शब्द संस्कृत भाषा से हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के ले लिए गए हैं वे तत्सम कहलाते हैं। जैसे-अग्नि, क्षेत्र, वायु, रात्रि, सूर्य आदि।
2. तद्भव- जो शब्द रूप बदलने के बाद संस्कृत से हिन्दी में आए हैं वे तद्भव कहलाते हैं। जैसे-आग (अग्नि), खेत(क्षेत्र), रात (रात्रि), सूरज (सूर्य) आदि।
3. देशज- जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं वे देशज कहलाते हैं। जैसे-पगड़ी, गाड़ी, थैला, पेट, खटखटाना आदि।
4. विदेशी या विदेशज- विदेशी जातियों के संपर्क से उनकी भाषा के बहुत से शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी अथवा विदेशज कहलाते हैं। जैसे-स्कूल, अनार, आम, कैंची,अचार, पुलिस, टेलीफोन, रिक्शा आदि। ऐसे कुछ विदेशी शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है।

अंग्रेजी- कॉलेज, पैंसिल, रेडियो, टेलीविजन, डॉक्टर, लैटरबक्स, पैन, टिकट, मशीन, सिगरेट, साइकिल, बोतल आदि।

फारसी- अनार,चश्मा, जमींदार, दुकान, दरबार, नमक, नमूना, बीमार, बर्फ, रूमाल, आदमी, चुगलखोर, गंदगी, चापलूसी आदि।

अरबी- औलाद, अमीर, कत्ल, कलम, कानून, खत, फकीर, रिश्वत, औरत, कैदी, मालिक, गरीब आदि।

तुर्की- कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दारोगा, बहादुर आदि।

पुर्तगाली- अचार, आलपीन, कारतूस, गमला, चाबी, तिजोरी, तौलिया, पिता, साबुन, तम्बाकू, कॉफी, कमीज आदि।

फ्रांसीसी- पुलिस, कार्टून, इंजीनियर, कर्फ्यू, बिगुल आदि।

चीनी- तूफान, लीची, चाय, पटाखा आदि।

यूनानी- टेलीफोन, टेलीग्राफ, ऐटम, टेल्टा आदि।

जापानी- रिक्शा आदि।

प्रयोग के आधार पर शब्द-भेद

प्रयोग के आधार पर शब्द के निम्नलिखित आठ भेद है-

1. संज्ञा
2. सर्वनाम
3. विशेषण
4. क्रिया

5. क्रिया-विशेषण
6. सम्बन्धबोधक
7. समुच्चयबोधक
8. विस्मयादिबोधक

इन उपर्युक्त आठ प्रकार के शब्दों को भी विकार की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जा सकता है-
1. विकारी
2. अविकारी

1. विकारी शब्द

जिन शब्दों का रूप-परिवर्तन होता रहता है वे विकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे-कुत्ता, कुत्ते, कुत्तों, मैं मुझे,हमें अच्छा, अच्छे खाता है, खाती है, खाते हैं। इनमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं।

2. अविकारी शब्द

जिन शब्दों के रूप में कभी कोई परिवर्तन नही होता है वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे-यहाँ, किन्तु, नित्य, और, हे अरे आदि। इनमें क्रिया-विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक आदि हैं।

अर्थ की दृष्टि से शब्द-भेद

अर्थ की दृष्टि से शब्द के दो भेद हैं-
1. सार्थक
2. निरर्थक

1. सार्थक शब्द

जिन शब्दों का कुछ-न-कुछ अर्थ हो वे शब्द सार्थक शब्द कहलाते हैं। जैसे-रोटी, पानी, ममता, आ आदि।

2. निरर्थक शब्द

जिन शब्दों का कोई अर्थ नही□होता है वे शब्द निरर्थक कहलाते हैं। जैसे-रोटी-वोटी, पानी-वानी, □□ा-व□ा इनमें वोटी, वानी, व□ा आदि निरर्थक शब्द हैं।
विशेष- निरर्थक शब्दों पर व्याकरण में कोई विचार नही□किया जाता है।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=4&booktype=free

अध्याय 4

पद-विचार

सार्थक वर्ण-समूह शब्द कहलाता है, पर जब इसका प्रयोग वाक्य में होता है तो वह स्वतन्त्र नही□रहता बल्कि व्याकरण के नियमों में बँध जाता है और प्रायः इसका रूप भी बदल जाता है। जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो उसे शब्द न कहकर पद कहा जाता है।

हिन्दी में पद पाँच प्रकार के होते हैं-
1. संज्ञा
2. सर्वनाम
3. विशेषण
4. क्रिया
5. अव्यय

1. संज्ञा

किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि तथा नाम के गुण, धर्म, स्वभाव का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। जैसे-श्याम, आम, मिठास, हाथी आदि।

संज्ञा के प्रकार- संज्ञा के तीन भेद हैं-
1. व्यक्तिवाचक संज्ञा।
2. जातिवाचक संज्ञा।
3. भाववाचक संज्ञा।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष, व्यक्ति, प्राणी, वस्तु अथवा स्थान का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-जयप्रकाश नारायण, श्रीकृष्ण, रामायण, ताजमहल, कुतुबमीनार, लालकिला हिमालय आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा

जिस संज्ञा शब्द से उसकी संपूर्ण जाति का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-मनुष्य, नदी, नगर, पर्वत, पशु, पक्षी, लड़का, कुत्ता, गाय, घोड़ा, भैंस, बकरी, नारी, गाँव आदि।

3. भाववाचक संज्ञा

जिस संज्ञा शब्द से पदार्थों की अवस्था, गुण-दोष, धर्म आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-बुढापा, मिठास, बचपन, मोटापा, चढ़ाई, थकावट आदि। विशेष वक्तव्य- कुछ विद्वान अंग्रेजी व्याकरण के प्रभाव के कारण संज्ञा शब्द के दो भेद और बतलाते हैं-

1. समुदायवाचक संज्ञा।
2. द्रव्यवाचक संज्ञा।

1. समुदायवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से व्यक्तियों, वस्तुओं आदि के समूह का बोध हो उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-सभा, कक्षा, सेना, भीड़, पुस्तकालय दल आदि।

2. द्रव्यवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा-शब्दों से किसी धातु, द्रव्य आदि पदार्थों का बोध हो उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-घी, तेल, सोना, चाँदी,पीतल, चावल, गेहूँ, कोयला, लोहा आदि।

इस प्रकार संज्ञा के पाँच भेद हो गए, किन्तु अनेक विद्वान समुदायवाचक और द्रव्यवाचक संज्ञाओं को जातिवाचक संज्ञा के अंतर्गत ही मानते हैं, और यही उचित भी प्रतीत होता है। भाववाचक संज्ञा बनाना- भाववाचक संज्ञाएँ चार प्रकार के शब्दों से बनती हैं। जैसे-

1. जातिवाचक संज्ञाओं से

दास दासता
पण्डित पाण्डित्य
बन्धु बन्धुत्व
क्षत्रिय क्षत्रियत्व
पुरुष पुरुषत्व
प्रभु प्रभुता
पशु पशुता,पशुत्व
ब्राह्मण ब्राह्मणत्व
मित्र मित्रता
बालक बालकपन
बच्चा बचपन
नारी नारीत्व

2. सर्वनाम से

अपना अपनापन, अपनत्व निज निजत्व,निजता
पराया परायापन
स्व स्वत्व
सर्व सर्वस्व
अहं अहंकार
मम ममत्व,ममता

3. विशेषण से

मीठा मिठास
चतुर चातुर्य, चतुराई
मधुर माधुर्य
सुन्दर सौंदर्य, सुन्दरता
निर्बल निर्बलता सफ़ेद सफ़ेदी
हरा हरियाली
सफल सफलता
प्रवीण प्रवीणता
मैला मैल

निपुण निपुणता
खट्टा खटास

4. क्रिया से

खेलना खेल
थकना थकावट
लिखना लेख, लिखाई
हँसना हँसी
लेना-देना लेन-देन
पढ़ना पढ़ाई
मिलना मेल
चढ़ना चढ़ाई
मुसकाना मुसकान
कमाना कमाई
उतरना उतराई
उड़ना उड़ान
रहना-सहना रहन-सहन
देखना-भालना देख-भाल

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=5&booktype=free

अध्याय 5

संज्ञा के विकारक तत्व

जिन तत्वों के आधार पर संज्ञा (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) का रूपान्तर होता है वे विकारक तत्व कहलाते हैं।
वाक्य में शब्दों की स्थिति के आधार पर ही उनमें विकार आते हैं। यह विकार लिंग, वचन और कारक के कारण ही होता है। जैसे-लड़का शब्द के चारों रूप- 1.लड़का, 2.लड़के, 3.लड़कों, 4.लड़को-केवल वचन और कारकों के कारण बनते हैं।
लिंग- जिस चिह्न से यह बोध होता हो कि अमुक शब्द पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का वह लिंग कहलाता है।

परिभाषा- शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति के होने का ज्ञान हो उसे लिङ्ग कहते हैं। जैसे-लड़का, लड़की, नर, नारी आदि। इनमें 'लड़का' और 'नर' पुल्लिङ्ग तथा लड़की और 'नारी' स्त्रीलिङ्ग हैं।

हिन्दी में लिङ्ग के दो भेद हैं-
1. पुल्लिङ्ग।
2. स्त्रीलिङ्ग।

1. पुल्लिङ्ग

जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो अथवा जो शब्द पुरुष जाति के अन्तर्गत माने जाते हैं वे पुल्लिङ्ग हैं। जैसे-कुत्ता, लड़का, पेड़, सिंह, बैल, घर आदि।

2. स्त्रीलिङ्ग

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो अथवा जो शब्द स्त्री जाति के अन्तर्गत माने जाते हैं वे स्त्रीलिङ्ग हैं। जैसे-गाय, घड़ी, लड़की, कुरसी, छड़ी, नारी आदि।

पुल्लिङ्ग की पहचान

1. आ, आव, पा, पन न ये प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में हों वे प्रायः पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे-मोटा, चढ़ाव, बुढापा, लड़कपन लेन-देन।
2. पर्वत, मास, वार और कुछ ग्रहों के नाम पुल्लिङ्ग होते हैं जैसे-विंध्याचल, हिमालय, वैशाख, सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, राहु, केतु (ग्रह)।
3. पेड़ों के नाम पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे-पीपल, नीम, आम, शीशम, सागौन, जामुन, बरगद आदि।
4. अनाजों के नाम पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे-बाजरा, गेहूँ, चावल, चना, मटर, जौ, उड़द आदि।
5. द्रव पदार्थों के नाम पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे-पानी, सोना, ताँबा, लोहा, घी, तेल आदि।
6. रत्नों के नाम पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे-हीरा, पन्ना, मूँगा, मोती माणिक आदि।
7. देह के अवयवों के नाम पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे-सिर, मस्तक, दाँत, मुख, कान, गला, हाथ, पाँव, होंठ, तालु, नख, रोम आदि।
8. जल, स्थान और भूम□ल के भागों के नाम पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे-समुद्र, भारत, देश, नगर, द्वीप, आकाश, पाताल, घर, सरोवर आदि।

9. वर्णमाला के अनेक अक्षरों के नाम पुल्लिङ होते हैं। जैसे-अ,ऊ,ए,ओ,क,ख,ग,घ, च,छ,य,र,ल,व,श आदि।

स्त्रीलिङ की पहचान

1. जिन सञ्ज्ञा शब्दों के अन्त में ख होते है, वे स्त्रीलिङ कहलाते हैं। जैसे-ईख, भूख, चोख, राख, कोख, लाख, देखरेख आदि।
2. जिन भाववाचक सञ्ज्ञाओ□के अन्त में ट, वट, या हट होता है, वे स्त्रीलिङ कहलाती हैं। जैसे-झञ्झट, आहट, चिकनाहट, बनावट, सजावट आदि।
3. अनुस्वारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, तकारान्त, सकारान्त सञ्ज्ञाएँ स्त्रीलिङ कहलाती है। जैसे-रोटी, टोपी, नदी, चिट्ठी, उदासी, रात, बात, छत, भीत, लू, बालू, दारू, सरसों, खड़ाऊँ, प्यास, वास, साँस आदि।
4. भाषा, बोली और लिपियों के नाम स्त्रीलिङ होते हैं। जैसे-हिन्दी, सञ्स्कृत, देवनागरी, पहाड़ी, तेलुगु पञ्जाबी गुरुमुखी।
5. जिन शब्दों के अन्त में इया आता है वे स्त्रीलिङ होते हैं। जैसे-कुटिया, खटिया, चिड़िया आदि।
6. नदियों के नाम स्त्रीलिङ होते हैं। जैसे-गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती आदि।
7. तारीखों और तिथियों के नाम स्त्रीलिङ होते हैं। जैसे-पहली, दूसरी, प्रतिपदा, पूर्णिमा आदि।
8. पृथ्वी ग्रह स्त्रीलिङ होते हैं।
9. नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिङ होते हैं। जैसे-अश्विनी, भरणी, रोहिणी आदि।

शब्दों का लिङ-परिवर्तन

प्रत्यय	पुल्लिङ	स्त्रीलिङ
ई	घोड़ा	घोड़ी
	देव	देवी
	दादा	दादी
	लड़का	लड़की
	ब्राह्मण	ब्राह्मणी

	नर	नारी
	बकरा	बकरी
इया	चूहा	चुहिया
	चिड़ा	चिड़िया
	बेटा	बिटिया
	गुड्□ा	गुड़िया
	लोटा	लुटिया
इन	माली	मालिन
	कहार	कहारिन
	सुनार	सुनारिन
	लुहार	लुहारिन
	धोबी	धोबिन
नी	मोर	मोरनी
	हाथी	हाथिन
	सिह्न	सिह्नी
आनी	नौकर	नौकरानी
	चौधरी	चौधरानी
	देवर	देवरानी
	सेठ	सेठानी
	जेठ	जेठानी
आइन	पण्डित	पण्डिताइन
	ठाकुर	ठाकुराइन
आ	बाल	बाला
	सुत	सुता

	छात्र	छात्रा
	शिष्य	शिष्या
अक को इका करके	पाठक	पाठिका
	अध्यापक	अध्यापिका
	बालक	बालिका
	लेखक	लेखिका
	सेवक	सेविका
इनी (इणी)	तपस्वी	तपस्विनी
	हितकारी	हितकारिनी
	स्वामी	स्वामिनी
	परोपकारी	परोपकारिनी

कुछ विशेष शब्द जो स्त्रीलिङ्ग में बिलकुल ही बदल जाते हैं।

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पिता	माता
भाई	भाभी
नर	मादा
राजा	रानी
ससुर	सास
सम्राट	सम्राज्ञी
पुरुष	स्त्री
बैल	गाय
युवक	युवती

विशेष वक्तव्य- जो प्राणिवाचक सदा शब्द ही स्त्रीलिङ्ग हैं अथवा जो सदा ही पुल्लिङ्ग हैं उनके पुल्लिङ्ग अथवा स्त्रीलिङ्ग जताने के लिए उनके साथ 'नर' व 'मादा' शब्द लगा देते हैं। जैसे-

स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग
मक्खी	नर मक्खी
कोयल	नर कोयल
गिलहरी	नर गिलहरी
मैना	नर मैना
तितली	नर तितली
बाज	मादा बाज
खटमल	मादा खटमल
चील	नर चील
कछुआ	नर कछुआ
कौआ	नर कौआ
भेड़िया	मादा भेड़िया
उल्लू	मादा उल्लू
मच्छर	मादा मच्छर

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=6&booktype=free

अध्याय 6

वचन

परिभाषा-शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का बोध हो उसे वचन कहते हैं।

हिन्दी में वचन दो होते हैं-

1. एकवचन

2. बहुवचन

एकवचन

शब्द के जिस रूप से एक ही वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे-लड़का, गाय, सिपाही, बच्चा, कपड़ा, माता, माला, पुस्तक, स्त्री, टोपी बन्दर, मोर आदि।

बहुवचन

शब्द के जिस रूप से अनेकता का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे-लड़के, गायें, कपड़े, टोपियाँ, मालाएँ, माताएँ, पुस्तकें, वधुएँ, गुरुजन, रोटियाँ, स्त्रियाँ, लताएँ, बेटे आदि।
एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग
(क) आदर के लिए भी बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे-
(1) भीष्म पितामह तो ब्रह्मचारी थे।
(2) गुरुजी आज नहीं आये।
(3) शिवाजी सच्चे वीर थे।
(ख) बड़प्पन दर्शाने के लिए कुछ लोग वह के स्थान पर वे और मैं के स्थान हम का प्रयोग करते हैं जैसे-
(1) मालिक ने कर्मचारी से कहा, हम मीटिंग में जा रहे हैं।
(2) आज गुरुजी आए तो वे प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।
(ग) केश, रोम, अश्रु, प्राण, दर्शन, लोग, दर्शक, समाचार, दाम, होश, भाग्य आदि ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग बहुधा बहुवचन में ही होता है। जैसे-
(1) तुम्हारे केश बड़े सुन्दर हैं।
(2) लोग कहते हैं।
बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग
(क) तू एकवचन है जिसका बहुवचन है तुम किन्तु सभ्य लोग आजकल लोक-व्यवहार में एकवचन के लिए तुम का ही प्रयोग करते हैं जैसे-
(1) मित्र, तुम कब आए।
(2) क्या तुमने खाना खा लिया।
(ख) वर्ग, वृन्द, दल, गण, जाति आदि शब्द अनेकता को प्रकट करने वाले हैं, किन्तु इनका व्यवहार एकवचन के समान होता है। जैसे-
(1) सैनिक दल शत्रु का दमन कर रहा है।
(2) स्त्री जाति संघर्ष कर रही है।

(ग) जातिवाचक शब्दों का प्रयोग एकवचन में किया जा सकता है। जैसे-

(1) सोना बहुमूल्य वस्तु है।

(2) मुम्बई का आम स्वादिष्ट होता है।

बहुवचन बनाने के नियम

(1) अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्तिम अ को एँ कर देने से शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखें
बहन	बहनें
पुस्तक	पुस्तकें
सड़क	सड़के
गाय	गायें
बात	बातें

(2) आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के अन्तिम 'आ' को 'ए' कर देने से शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
घोड़ा	घोड़े	कौआ	कौए
कुत्ता	कुत्ते	गधा	गधे
केला	केले	बेटा	बेटे

(3) आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्तिम 'आ' के आगे 'एँ' लगा देने से शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कन्या	कन्याएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
कला	कलाएँ	माता	माताएँ
कविता	कविताएँ	लता	लताएँ

(4) इकारान्त अथवा ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में 'याँ' लगा देने से और दीर्घ ई को ह्रस्व इ कर देने से शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बुद्धि	बुद्धियाँ	गति	गतियाँ
कली	कलियाँ	नीति	नीतियाँ
कॉपी	कॉपियाँ	लड़की	लड़कियाँ
थाली	थालियाँ	नारी	नारियाँ

(5) जिन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में या है उनके अन्तिम आ को आँ कर देने से वे बहुवचन बन जाते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गुड़िया	गुड़ियाँ	बिटिया	बिटियाँ
चुहिया	चुहियाँ	कुतिया	कुतियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	खटिया	खटियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ	गैया	गैयाँ

(6) कुछ शब्दों में अन्तिम उ, ऊ और औ के साथ एँ लगा देते हैं और दीर्घ ऊ के साथन पर ह्रस्व उ हो जाता है। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गौ	गौएँ	बहू	बहूएँ
वधू	वधूएँ	वस्तु	वस्तुएँ
धेनु	धेनुएँ	धातु	धातुएँ

(7) दल, वृन्द, वर्ग, जन लोग, गण आदि शब्द जोड़कर भी शब्दों का बहुवचन बना देते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अध्यापक	अध्यापकवृन्द	मित्र	मित्रवर्ग

विद्यार्थी	विद्यार्थीगण	सेना	सेनादल
आप	आप लोग	गुरु	गुरुजन
श्रोता	श्रोताजन	गरीब	गरीब लोग

(8) कुछ शब्दों के रूप 'एकवचन' और 'बहुवचन' दोनो में समान होते हैं। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
क्षमा	क्षमा	नेता	नेता
जल	जल	प्रेम	प्रेम
गिरि	गिरि	क्रोध	क्रोध
राजा	राजा	पानी	पानी

विशेष- (1) जब संज्ञाओं के साथ ने, को, से आदि परसर्ग लगे होते हैं तो संज्ञाओं का बहुवचन बनाने के लिए उनमें 'ओ' लगाया जाता है। जैसे-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़के को बुलाओ	लड़को को बुलाओ	बच्चे ने गाना गाया	बच्चों ने गाना गाया
नदी का जल ठंडा है	नदियों का जल ठंडा है	आदमी से पूछ लो	आदमियों से पूछ लो

(2) संबोधन में 'ओ' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है। जैसे-
बच्चों ! ध्यान से सुनो। भाइयों ! मेहनत करो। बहनो ! अपना कर्तव्य निभाओ।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=7&booktype=free

अध्याय 7

कारक

परिभाषा-संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सीधा संबंध क्रिया के साथ ज्ञात हो वह कारक कहलाता है। जैसे-गीता ने दूध पीया। इस वाक्य में 'गीता' पीना क्रिया का कर्ता है और दूध उसका कर्म। अतः 'गीता' कर्ता कारक है और 'दूध' कर्म कारक।

कारक विभक्ति- संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के बाद 'ने, को, से, के लिए', आदि जो चिह्न लगते हैं वे चिह्न कारक विभक्ति कहलाते हैं।

हिन्दी में आठ कारक होते हैं। उन्हें विभक्ति चिह्नों सहित नीचे देखा जा सकता है-
कारक विभक्ति चिह्न (परसर्ग)
1. कर्ता ने
2. कर्म को
3. करण से, के साथ, के द्वारा
4. सम्प्रदान के लिए, को
5. अपादान से (पृथक)
6. सम्बन्ध का, के, की
7. अधिकरण में, पर
8. सम्बोधन हे ! हरे !
कारक चिह्न स्मरण करने के लिए इस पद की रचना की गई हैं-
कर्ता ने अरु कर्म को, करण रीति से जान।
सम्प्रदान को, के लिए, अपादान से मान।।
का, के, की, सम्बन्ध हैं, अधिकरणादिक में मान।
रे ! हे ! हो ! सम्बोधन, मित्र धरहु यह ध्यान।।
विशेष-कर्ता से अधिकरण तक विभक्ति चिह्न (परसर्ग) शब्दों के अन्त में लगाए जाते हैं, किन्तु सम्बोधन कारक के चिह्न-हे, रे, आदि प्रायः शब्द से पूर्व लगाए जाते हैं।

1. कर्ता कारक

जिस रूप से क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध होता है वह 'कर्ता' कारक कहलाता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'ने' है। इस 'ने' चिह्न का वर्तमानकाल और भविष्यकाल में प्रयोग नही होता है। इसका सकर्मक धातुओ के साथ भूतकाल में प्रयोग होता है। जैसे- 1.राम ने रावण को मारा। 2.लड़की स्कूल जाती है।

पहले वाक्य में क्रिया का कर्ता राम है। इसमें 'ने' कर्ता कारक का विभक्ति-चिह्न है। इस वाक्य में 'मारा' भूतकाल की क्रिया है। 'ने' का प्रयोग प्रायः भूतकाल में होता है। दूसरे वाक्य में वर्तमानकाल की क्रिया का कर्ता लड़की है। इसमें 'ने' विभक्ति का प्रयोग नही हुआ है।

विशेष- (1) भूतकाल में अकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ भी ने परसर्ग (विभक्ति चिह्न) नही लगता है। जैसे-वह हँसा।
(2) वर्तमानकाल व भविष्यतकाल की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ ने परसर्ग का प्रयोग नही होता है। जैसे-वह ल खाता है। वह ल खाएगा।
(3) कभी-कभी कर्ता के साथ 'को' तथा 'स' का प्रयोग भी किया जाता है। जैसे-
(अ) बालक को सो जाना चाहिए। (आ) सीता से पुस्तक पढ़ी गई।
(इ) रोगी से चला भी नही जाता। (ई) उससे शब्द लिखा नही गया।

2. कर्म कारक

क्रिया के कार्य का ल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'को' है। यह चिह्न भी बहुत-से स्थानों पर नही लगता। जैसे- 1. मोहन ने साँप को मारा। 2. लड़की ने पत्र लिखा। पहले वाक्य में 'मारने' की क्रिया का ल साँप पर पड़ा है। अतः साँप कर्म कारक है। इसके साथ परसर्ग 'को' लगा है।
दूसरे वाक्य में 'लिखने' की क्रिया का ल पत्र पर पड़ा। अतः पत्र कर्म कारक है। इसमें कर्म कारक का विभक्ति चिह्न 'को' नही लगा।

3. करण कारक

सज्ञा आदि शब्दों के जिस रूप से क्रिया के करने के साधन का बोध हो अर्थात् जिसकी सहायता से कार्य सम्पन्न हो वह करण कारक कहलाता है। इसके विभक्ति-चिह्न 'से' के 'द्वारा' है। जैसे- 1.अर्जुन ने जयद्रथ को बाण से मारा। 2.बालक गेंद से खेल रहे है।
पहले वाक्य में कर्ता अर्जुन ने मारने का कार्य 'बाण' से किया। अतः 'बाण से' करण कारक है। दूसरे वाक्य में कर्ता बालक खेलने का कार्य 'गेंद से' कर रहे हैं। अतः 'गेंद से' करण कारक है।

4. सम्प्रदान कारक

सम्प्रदान का अर्थ है-देना। अर्थात कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है, अथवा जिसे कुछ देता है उसे व्यक्त करने वाले रूप को सम्प्रदान कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिह्न 'के लिए' को हैं।
1.स्वास्थ्य के लिए सूर्य को नमस्कार करो। 2.गुरुजी को ल दो।
इन दो वाक्यों में 'स्वास्थ्य के लिए' और 'गुरुजी को' सम्प्रदान कारक हैं।

5. अपादान कारक

सञ्ज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी से अलग होना पाया जाए वह अपादान कारक कहलाता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'से' है। जैसे- 1.बच्चा छत से गिर पड़ा। 2.सञ्जीता घोड़े से गिर पड़ी।
इन दोनों वाक्यों में 'छत से' और घोड़े 'से' गिरने में अलग होना प्रकट होता है। अतः घोड़े से और छत से अपादान कारक हैं।

6. सम्बन्ध कारक

शब्द के जिस रूप से किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सम्बन्ध प्रकट हो वह सम्बन्ध कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'का', 'के', 'की', 'रा', 'रे', 'री' है। जैसे- 1.यह राधेश्याम का बेटा है। 2.यह कमला की गाय है।
इन दोनों वाक्यों में 'राधेश्याम का बेटे' से और 'कमला का' गाय से सम्बन्ध प्रकट हो रहा है। अतः यहाँ सम्बन्ध कारक है।

7. अधिकरण कारक

शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति-चिह्न 'में', 'पर' हैं। जैसे- 1.भँवरा □लों पर मँ□रा रहा है। 2.कमरे में टी.वी. रखा है।
इन दोनों वाक्यों में '□लों पर' और 'कमरे में' अधिकरण कारक है।

8. सम्बोधन कारक

जिससे किसी को बुलाने अथवा सचेत करने का भाव प्रकट हो उसे सम्बोधन कारक कहते है और सम्बोधन चिह्न (!) लगाया जाता है। जैसे- 1.अरे भैया ! क्यों रो रहे हो ? 2.हे गोपाल ! यहाँ आओ।
इन वाक्यों में 'अरे भैया' और 'हे गोपाल' ! सम्बोधन कारक है।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=8&booktype=free

अध्याय 8

सर्वनाम

सर्वनाम-संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते है। संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। जैसे-मैं, हम, तू, तुम, वह, यह, आप, कौन, कोई, जो आदि।

सर्वनाम के भेद- सर्वनाम के छह भेद हैं-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम।
2. निश्चयवाचक सर्वनाम।
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम।
4. संबंधवाचक सर्वनाम।
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम।
6. निजवाचक सर्वनाम।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम का प्रयोग वक्ता या लेखक स्वयं अपने लिए अथवा श्रोता या पाठक के लिए अथवा किसी अन्य के लिए करता है वह पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है। पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं-

(1) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला अपने लिए करे, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-मैं, हम, मुझे, हमारा आदि।

(2) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला सुनने वाले के लिए करे, उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-तू, तुम,तुझे, तुम्हारा आदि।

(3) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला सुनने वाले के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष के लिए करे उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-वह, वे, उसने, यह, ये, इसने, आदि।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम किसी व्यक्ति वस्तु आदि की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करें वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इनमें 'यह', 'वह', 'वे' सर्वनाम शब्द किसी विशेष व्यक्ति आदि का निश्चयपूर्वक बोध करा रहे हैं, अतः ये निश्चयवाचक सर्वनाम है।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम शब्द के द्वारा किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का बोध न हो वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इनमें 'कोई' और 'कुछ' सर्वनाम शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति अथवा वस्तु का निश्चय नही□हो रहा है। अतः ऐसे शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

परस्पर एक-दूसरी बात का सम्बन्ध बतलाने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है उन्हें सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। इनमें 'जो', 'वह', 'जिसकी', 'उसकी', 'जैसा', 'वैसा'-ये दो-दो शब्द परस्पर सम्बन्ध का बोध करा रहे हैं। ऐसे शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम संज्ञा शब्दों के स्थान पर तो आते ही है, किन्तु वाक्य को प्रश्नवाचक भी बनाते हैं वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे-क्या, कौन आदि। इनमें 'क्या' और 'कौन' शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं, क्योंकि इन सर्वनामों के द्वारा वाक्य प्रश्नवाचक बन जाते हैं।

6. निजवाचक सर्वनाम

जहाँ अपने लिए 'आप' शब्द 'अपना' शब्द अथवा 'अपने' 'आप' शब्द का प्रयोग हो वहाँ निजवाचक सर्वनाम होता है। इनमें 'अपना' और 'आप' शब्द उत्तम, पुरुष मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के (स्वय□का) अपने आप का बोध करा रहे हैं। ऐसे शब्द निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

विशेष-जहाँ केवल 'आप' शब्द का प्रयोग श्रोता के लिए हो वहाँ यह आदर-सूचक मध्यम पुरुष होता है और जहाँ 'आप' शब्द का प्रयोग अपने लिए हो वहाँ निजवाचक होता है।

सर्वनाम शब्दों के विशेष प्रयोग

(1) आप, वे, ये, हम, तुम शब्द बहुवचन के रूप में हैं, किन्तु आदर प्रकट करने के लिए इनका प्रयोग एक व्यक्ति के लिए भी होता है।

(2) 'आप' शब्द स्वय□के अर्थ में भी प्रयुक्त हो जाता है। जैसे-मैं यह कार्य आप ही कर लूँगा।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=9&booktype=free

अध्याय 9

विशेषण

विशेषण की परिभाषा- संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, परिमाण आदि) बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं। जैसे-बड़ा, काला, लंबा, दयालु, भारी, सुन्दर, कायर, टेढ़ा-मेढ़ा, एक, दो आदि।

विशेष्य- जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाए वह विशेष्य कहलाता है। यथा- गीता सुन्दर है। इसमें 'सुन्दर' विशेषण है और 'गीता' विशेष्य है। विशेषण शब्द विशेष्य से पूर्व भी आते हैं और उसके बाद भी।

पूर्व में, जैसे- (1) थोड़ा-सा जल लाओ। (2) एक मीटर कपड़ा ले आना।

बाद में, जैसे- (1) यह रास्ता लंबा है। (2) खीरा कड़वा है।

विशेषण के भेद- विशेषण के चार भेद हैं-

1. गुणवाचक।
2. परिमाणवाचक।
3. संख्यावाचक।
4. संकेतवाचक अथवा सार्वनामिक।

1. गुणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के गुण-दोष का बोध हो वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-

(1) भाव- अच्छा, बुरा, कायर, वीर, □रपोक आदि।

(2) रंग- लाल, हरा, पीला, स□ द, काला, चमकीला, □ीका आदि।

(3) दशा- पतला, मोटा, सूखा, गाढ़ा, पिघला, भारी, गीला, गरीब, अमीर, रोगी, स्वस्थ, पालतू आदि।

(4) आकार- गोल, सु□ौल, नुकीला, समान, पोला आदि।

(5) समय- अगला, पिछला, दोपहर, संध्या, सवेरा आदि।

(6) स्थान- भीतरी, बाहरी, पंजाबी, जापानी, पुराना, ताजा, आगामी आदि।

(7) गुण- भला, बुरा, सुन्दर, मीठा, खट्टा, दानी,सच, झूठ, सीधा आदि।

(8) दिशा- उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी आदि।

2. परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा अथवा नाप-तोल का ज्ञान हो वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
परिमाणवाचक विशेषण के दो उपभेद है-
(1) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण- जिन विशेषण शब्दों से वस्तु की निश्चित मात्रा का ज्ञान हो। जैसे-
(क) मेरे सूट में साढ़े तीन मीटर कपड़ा लगेगा।
(ख) दस किलो चीनी ले आओ।
(ग) दो लिटर दूध गरम करो।
(2) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण- जिन विशेषण शब्दों से वस्तु की अनिश्चित मात्रा का ज्ञान हो। जैसे-
(क) थोड़ी-सी नमकीन वस्तु ले आओ।
(ख) कुछ आम दे दो।
(ग) थोड़ा-सा दूध गरम कर दो।

3. संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-एक, दो, द्वितीय, दुगुना, चौगुना, पाँचों आदि।
संख्यावाचक विशेषण के दो उपभेद हैं-
(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण- जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध हो। जैसे-दो पुस्तकें मेरे लिए ले आना।
निश्चित संख्यावाचक के निम्नलिखित चार भेद हैं-
(क) गणवाचक- जिन शब्दों के द्वारा गिनती का बोध हो। जैसे-
(1) एक लड़का स्कूल जा रहा है।
(2) पच्चीस रुपये दीजिए।
(3) कल मेरे यहाँ दो मित्र आएँगे।
(4) चार आम लाओ।
(ख) क्रमवाचक- जिन शब्दों के द्वारा संख्या के क्रम का बोध हो। जैसे-
(1) पहला लड़का यहाँ आए।
(2) दूसरा लड़का वहाँ बैठे।
(3) राम कक्षा में प्रथम रहा।
(4) श्याम द्वितीय श्रेणी में पास हुआ है।

(ग) आवृत्तिवाचक- जिन शब्दों के द्वारा केवल आवृत्ति का बोध हो। जैसे-
(1) मोहन तुमसे चौगुना काम करता है।
(2) गोपाल तुमसे दुगुना मोटा है।
(घ) समुदायवाचक- जिन शब्दों के द्वारा केवल सामूहिक सङ्ख्या का बोध हो। जैसे-
(1) तुम तीनों को जाना पड़ेगा।
(2) यहाँ से चारों चले जाओ।
(2) अनिश्चित सङ्ख्यावाचक विशेषण- जिन विशेषण शब्दों से निश्चित सङ्ख्या का बोध न हो। जैसे-कुछ बच्चे पार्क में खेल रहे हैं।

4. सङ्केतवाचक (निर्देशक) विशेषण

जो सर्वनाम सङ्केत द्वारा सञ्ज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं वे सङ्केतवाचक विशेषण कहलाते हैं।
विशेष-क्योंकि सङ्केतवाचक विशेषण सर्वनाम शब्दों से बनते हैं, अतः ये सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। इन्हें निर्देशक भी कहते हैं।
(1) परिमाणवाचक विशेषण और सङ्ख्यावाचक विशेषण में अन्तर- जिन वस्तुओं की नाप-तोल की जा सके उनके वाचक शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-'कुछ दूध लाओ'। इसमें 'कुछ' शब्द तोल के लिए आया है। इसलिए यह परिमाणवाचक विशेषण है।
2.जिन वस्तुओं की गिनती की जा सके उनके वाचक शब्द सङ्ख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-कुछ बच्चे इधर आओ। यहाँ पर 'कुछ' बच्चों की गिनती के लिए आया है। इसलिए यह सङ्ख्यावाचक विशेषण है। परिमाणवाचक विशेषणों के बाद द्रव्य अथवा पदार्थवाचक सञ्ज्ञाएँ आएँगी जबकि सङ्ख्यावाचक विशेषणों के बाद जातिवाचक सञ्ज्ञाएँ आती हैं।
(2) सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अन्तर- जिस शब्द का प्रयोग सञ्ज्ञा शब्द के स्थान पर हो उसे सर्वनाम कहते हैं। जैसे-वह मुम्बई गया। इस वाक्य में वह सर्वनाम है। जिस शब्द का प्रयोग सञ्ज्ञा से पूर्व अथवा बाद में विशेषण के रूप में किया गया हो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे-वह रथ आ रहा है। इसमें वह शब्द रथ का विशेषण है। अतः यह सार्वनामिक विशेषण है।

विशेषण की अवस्थाएँ

विशेषण शब्द किसी सञ्ज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। विशेषता बताई जाने वाली वस्तुओं के गुण-दोष कम-ज्यादा होते हैं। गुण-दोषों के इस कम-ज्यादा होने को

तुलनात्मक □ा से ही जाना जा सकता है। तुलना की दृष्टि से विशेषणों की निम्नलिखित तीन अवस्थाएँ होती हैं-

(1) मूलावस्था

(2) उत्तरावस्था

(3) उत्तमावस्था

(1) मूलावस्था

मूलावस्था में विशेषण का तुलनात्मक रूप नहीं□होता है। वह केवल सामान्य विशेषता ही प्रकट करता है। जैसे- 1.सावित्री सुन्दर लड़की है। 2.सुरेश अच्छा लड़का है। 3.सूर्य तेजस्वी है।

(2) उत्तरावस्था

जब दो व्यक्तियों या वस्तुओ□के गुण-दोषों की तुलना की जाती है तब विशेषण उत्तरावस्था में प्रयुक्त होता है। जैसे- 1.रवीन्द्र चेतन से अधिक बुद्धिमान है। 2.सविता रमा की अपेक्षा अधिक सुन्दर है।

(3) उत्तमावस्था

उत्तमावस्था में दो से अधिक व्यक्तियों एव□ वस्तुओ□की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक अथवा सबसे कम बताया गया है। जैसे- 1.पञ्जाब में अधिकतम अन्न होता है। 2.सन्दीप निकृष्टतम बालक है।

विशेष-केवल गुणवाचक एव□अनिश्चित सङ्ख्यावाचक तथा निश्चित परिमाणवाचक विशेषणों की ही ये तुलनात्मक अवस्थाएँ होती हैं, अन्य विशेषणों की नहीं□

अवस्थाओ□के रूप-

(1) अधिक और सबसे अधिक शब्दों का प्रयोग करके उत्तरावस्था और उत्तमावस्था के रूप बनाए जा सकते हैं। जैसे-

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
अच्छी	अधिक अच्छी	सबसे अच्छी
चतुर	अधिक चतुर	सबसे अधिक चतुर
बुद्धिमान	अधिक बुद्धिमान	सबसे अधिक बुद्धिमान
बलवान	अधिक बलवान	सबसे अधिक बलवान

इसी प्रकार दूसरे विशेषण शब्दों के रूप भी बनाए जा सकते हैं।

(2) तत्सम शब्दों में मूलावस्था में विशेषण का मूल रूप, उत्तरावस्था में 'तर' और उत्तमावस्था में 'तम' का प्रयोग होता है। जैसे-

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
महान, महानतर	महत्तर, महानतम	महत्तम
न्यून	न्यूनतर	न्यनूतम
लघु	लघुतर	लघुतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
विशाल	विशालतर	विशालतम
उत्कृष्ट	उत्कृष्टर	उत्कृट्ठतम
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
मधुर	मधुरतर	मधुतरतम

विशेषणों की रचना

कुछ शब्द मूलरूप में ही विशेषण होते हैं, किन्तु कुछ विशेषण शब्दों की रचना सञ्ज्ञा, सर्वनाम एव□क्रिया शब्दों से की जाती है-

(1) सञ्ज्ञा से विशेषण बनाना

प्रत्यय	सञ्ज्ञा	विशेषण	सञ्ज्ञा	विशेषण
क	अश्व	आश्विक	धर्म	धार्मिक
	अलङ्कार	आलङ्कारिक	नीति	नैतिक
	अर्थ	आर्थिक	दिन	दैनिक
	इतिहास	ऐतिहासिक	देव	दैविक

इत	अङ्क	अङ्कित	कुसुम	कुसुमित
	सुरभि	सुरभित	ध्वनि	ध्वनित
	क्षुधा	क्षुधित	तरङ्ग	तरङ्गित
इल	जटा	जटिल	पङ्क	पङ्किल
	[illegible] न	[illegible] निल	उर्मि	उर्मिल
इम	स्वर्ण	स्वर्णिम	रक्त	रक्तिम
ई	रोग	रोगी	भोग	भोगी
ईन,ईण	कुल	कुलीन	ग्राम	ग्रामीण
ईय	आत्मा	आत्मीय	जाति	जातीय
आलु	श्रद्धा	श्रद्धालु	ईर्ष्या	ईर्ष्यालु
वी	मनस	मनस्वी	तपस	तपस्वी
मय	सुख	सुखमय	दुख	दुखमय
वान	रूप	रूपवान	गुण	गुणवान
वती(स्त्री)	गुण	गुणवती	पुत्र	पुत्रवती
मान	बुद्धि	बुद्धिमान	श्री	श्रीमान
मती (स्त्री)	श्री	श्रीमती	बुद्धि	बुद्धिमती
रत	धर्म	धर्मरत	कर्म	कर्मरत
स्थ	समीप	समीपस्थ	देह	देहस्थ
निष्ठ	धर्म	धर्मनिष्ठ	कर्म	कर्मनिष्ठ

(2) सर्वनाम से विशेषण बनाना

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
वह	वैसा	यह	ऐसा

(3) क्रिया से विशेषण बनाना

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
पत	पतित	पूज	पूजनीय
पठ	पठित	वद्द	वद्दनीय
भागना	भागने वाला	पालना	पालने वाला

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=10&booktype=free

अध्याय 10

क्रिया

क्रिया- जिस शब्द अथवा शब्द-समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। जैसे-
(1) गीता नाच रही है।
(2) बच्चा दूध पी रहा है।
(3) राकेश कॉलेज जा रहा है।
(4) गौरव बुद्धिमान है।
(5) शिवाजी बहुत वीर थे।
इनमें 'नाच रही है', 'पी रहा है', 'जा रहा है' शब्द कार्य-व्यापार का बोध करा रहे हैं। जबकि 'है', 'थे' शब्द होने का। इन सभी से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध हो रहा है। अतः ये क्रियाएँ हैं।

धातु

क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है। जैसे-लिख, पढ़, जा, खा, गा, रो, पा आदि। इन्ही□धातुओ□ से लिखता, पढ़ता, आदि क्रियाएँ बनती हैं।
क्रिया के भेद- क्रिया के दो भेद हैं-
(1) अकर्मक क्रिया।
(2) सकर्मक क्रिया।

1. अकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओ□का □ल सीधा कर्ता पर ही पड़े वे अकर्मक क्रिया कहलाती हैं। ऐसी अकर्मक क्रियाओ□को कर्म की आवश्यकता नही□होती। अकर्मक क्रियाओ□के अन्य उदाहरण हैं-
(1) गौरव रोता है।
(2) साँप रेंगता है।
(3) रेलगाड़ी चलती है।
कुछ अकर्मक क्रियाएँ- लजाना, होना, बढ़ना, सोना, खेलना, अकड़ना, □रना, बैठना, हँसना, उगना, जीना, दौड़ना, रोना, ठहरना, चमकना, □ोलना, मरना, घटना, □ाँदना, जागना, बरसना, उछलना, कूदना आदि।

2. सकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओ□का □ल (कर्ता को छोड़कर) कर्म पर पड़ता है वे सकर्मक क्रिया कहलाती हैं। इन क्रियाओ□में कर्म का होना आवश्यक हैं, सकर्मक क्रियाओ□के अन्य उदाहरण हैं-
(1) मैं लेख लिखता हूँ।
(2) रमेश मिठाई खाता है।
(3) सविता □ल लाती है।
(4) भँवरा □ूलों का रस पीता है।
3.द्विकर्मक क्रिया- जिन क्रियाओ□के दो कर्म होते हैं, वे द्विकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं। द्विकर्मक क्रियाओ□के उदाहरण हैं-
(1) मैंने श्याम को पुस्तक दी।
(2) सीता ने राधा को रुपये दिए।
ऊपर के वाक्यों में 'देना' क्रिया के दो कर्म हैं। अतः देना द्विकर्मक क्रिया हैं।

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के भेद

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के निम्नलिखित पाँच भेद हैं-
1.सामान्य क्रिया- जहाँ केवल एक क्रिया का प्रयोग होता है वह सामान्य क्रिया कहलाती है। जैसे-
1. आप आए।
2.वह नहाया आदि।
2.सयुक्त क्रिया- जहाँ दो अथवा अधिक क्रियाओ□का साथ-साथ प्रयोग हो वे सयुक्त क्रिया कहलाती हैं। जैसे-
1.सविता महाभारत पढ़ने लगी।

2.वह खा चुका।
3.नामधातु क्रिया- संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण शब्दों से बने क्रियापद नामधातु क्रिया कहलाते हैं। जैसे-हथियाना, शरमाना, अपनाना, लजाना, चिकनाना, झुठलाना आदि।
4.प्रेरणार्थक क्रिया- जिस क्रिया से पता चले कि कर्ता स्वय कार्य को न करके किसी अन्य को उस कार्य को करने की प्रेरणा देता है वह प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। ऐसी क्रियाओ के दो कर्ता होते हैं- (1) प्रेरक कर्ता- प्रेरणा प्रदान करने वाला। (2) प्रेरित कर्ता-प्रेरणा लेने वाला। जैसे-श्यामा राधा से पत्र लिखवाती है। इसमें वास्तव में पत्र तो राधा लिखती है, किन्तु उसको लिखने की प्रेरणा देती है श्यामा। अतः 'लिखवाना' क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया है। इस वाक्य में श्यामा प्रेरक कर्ता है और राधा प्रेरित कर्ता।
5.पूर्वकालिक क्रिया- किसी क्रिया से पूर्व यदि कोई दूसरी क्रिया प्रयुक्त हो तो वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे- मैं अभी सोकर उठा हूँ। इसमें 'उठा हूँ' क्रिया से पूर्व 'सोकर' क्रिया का प्रयोग हुआ है। अतः 'सोकर' पूर्वकालिक क्रिया है।
विशेष- पूर्वकालिक क्रिया या तो क्रिया के सामान्य रूप में प्रयुक्त होती है अथवा धातु के अन्त में 'कर' अथवा 'करके' लगा देने से पूर्वकालिक क्रिया बन जाती है। जैसे-
(1) बच्चा दूध पीते ही सो गया।
(2) लड़कियाँ पुस्तकें पढ़कर जाएँगी।

अपूर्ण क्रिया

कई बार वाक्य में क्रिया के होते हुए भी उसका अर्थ स्पष्ट नही हो पाता। ऐसी क्रियाएँ अपूर्ण क्रिया कहलाती हैं। जैसे-गाँधीजी थे। तुम हो। ये क्रियाएँ अपूर्ण क्रियाएँ है। अब इन्ही वाक्यों को ि र से पढ़िए-
गाधीजी राष्ट्रपिता थे। तुम बुद्धिमान हो।
इन वाक्यों में क्रमशः 'राष्ट्रपिता' और 'बुद्धिमान' शब्दों के प्रयोग से स्पष्टता आ गई। ये सभी शब्द 'पूरक' हैं।
अपूर्ण क्रिया के अर्थ को पूरा करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें पूरक कहते हैं।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=11&booktype=free

अध्याय 11

काल

काल

क्रिया के जिस रूप से कार्य सम्पन्न होने का समय (काल) ज्ञात हो वह काल कहलाता है। काल के निम्नलिखित तीन भेद हैं-

1. भूतकाल।
2. वर्तमानकाल।
3. भविष्यकाल।

1. भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय (अतीत) में कार्य सम्पन्न होने का बोध हो वह भूतकाल कहलाता है। जैसे-

(1) बच्चा गया।

(2) बच्चा गया है।

(3) बच्चा जा चुका था।

ये सब भूतकाल की क्रियाएँ हैं, क्योंकि 'गया', 'गया है', 'जा चुका था', क्रियाएँ भूतकाल का बोध कराती है।

भूतकाल के निम्नलिखित छह भेद हैं-

1. सामान्य भूत।
2. आसन्न भूत।
3. अपूर्ण भूत।
4. पूर्ण भूत।
5. सन्दिग्ध भूत।
6. हेतुहेतुमद भूत।

1.सामान्य भूत- क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध हो किन्तु ठीक समय का ज्ञान न हो, वहाँ सामान्य भूत होता है। जैसे-

(1) बच्चा गया।

(2) श्याम ने पत्र लिखा।

(3) कमल आया।

2.आसन्न भूत- क्रिया के जिस रूप से अभी-अभी निकट भूतकाल में क्रिया का होना प्रकट हो, वहाँ आसन्न भूत होता है। जैसे-

(1) बच्चा आया है।

(2) श्यान ने पत्र लिखा है।

(3) कमल गया है।

3.अपूर्ण भूत- क्रिया के जिस रूप से कार्य का होना बीते समय में प्रकट हो, पर पूरा होना प्रकट न हो वहाँ अपूर्ण भूत होता है। जैसे-

(1) बच्चा आ रहा था।

(2) श्याम पत्र लिख रहा था।

(3) कमल जा रहा था।

4.पूर्ण भूत- क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है उसे पूर्ण भूत कहते हैं। जैसे-

(1) श्याम ने पत्र लिखा था।

(2) बच्चा आया था।

(3) कमल गया था।

5.सदिग्ध भूत- क्रिया के जिस रूप से भूतकाल का बोध तो हो किन्तु कार्य के होने में सदेह हो वहाँ सदिग्ध भूत होता है। जैसे-

(1) बच्चा आया होगा।

(2) श्याम ने पत्र लिखा होगा।

(3) कमल गया होगा।

6.हेतुहेतुमद भूत- क्रिया के जिस रूप से बीते समय में एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया का होना आश्रित हो अथवा एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया का न होना आश्रित हो वहाँ हेतुहेतुमद भूत होता है। जैसे-

(1) यदि श्याम ने पत्र लिखा होता तो मैं अवश्य आता।

(2) यदि वर्षा होती तो □सल अच्छी होती।

2. वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान काल में होना पाया जाए उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे-

(1) मुनि माला □रता है।

(2) श्याम पत्र लिखता होगा।

इन सब में वर्तमान काल की क्रियाएँ हैं, क्योंकि '□रता है', 'लिखता होगा', क्रियाएँ वर्तमान काल का बोध कराती हैं।

इसके निम्नलिखित तीन भेद हैं-

(1) सामान्य वर्तमान।

(2) अपूर्ण वर्तमान।

(3) सदिग्ध वर्तमान।

1.सामान्य वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य वर्तमान काल में सामान्य रूप से होता है वहाँ सामान्य वर्तमान होता है। जैसे-

(1) बच्चा रोता है।

(2) श्याम पत्र लिखता है।

(3) कमल आता है।

2.अपूर्ण वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य अभी चल ही रहा है, समाप्त नही हुआ है वहाँ अपूर्ण वर्तमान होता है। जैसे-

(1) बच्चा रो रहा है।

(2) श्याम पत्र लिख रहा है।

(3) कमल आ रहा है।

3.सदिग्ध वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से वर्तमान में कार्य के होने में सदेह का बोध हो वहाँ सदिग्ध वर्तमान होता है। जैसे-

(1) अब बच्चा रोता होगा।

(2) श्याम इस समय पत्र लिखता होगा।

3. भविष्यत काल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्य में होगा वह भविष्यत काल कहलाता है। जैसे- (1) श्याम पत्र लिखेगा। (2) शायद आज सध्या को वह आए।

इन दोनों में भविष्यत काल की क्रियाएँ हैं, क्योंकि लिखेगा और आए क्रियाएँ भविष्यत काल का बोध कराती हैं।

इसके निम्नलिखित दो भेद हैं-

1. सामान्य भविष्यत।

2. सभाव्य भविष्यत।

1.सामान्य भविष्यत- क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने का बोध हो उसे सामान्य भविष्यत कहते हैं। जैसे-

(1) श्याम पत्र लिखेगा।

(2) हम घूमने जाएँगे।

2.सम्भाव्य भविष्यत- क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने की सम्भावना का बोध हो वहाँ सम्भाव्य भविष्यत होता है जैसे-

(1) शायद आज वह आए।

(2) सम्भव है श्याम पत्र लिखे।

(3) कदाचित सन्ध्या तक पानी पड़े।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=12&booktype=free

अध्याय 12

वाच्य

वाच्य-क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाक्य में क्रिया द्वारा सम्पादित विधान का विषय कर्ता है, कर्म है, अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य के तीन प्रकार हैं-

1. कर्तृवाच्य।
2. कर्मवाच्य।
3. भाववाच्य।

1.कर्तृवाच्य- क्रिया के जिस रूप से वाक्य के उद्देश्य (क्रिया के कर्ता) का बोध हो, वह कर्तृवाच्य कहलाता है। इसमें लिङ्ग एवं वचन प्रायः कर्ता के अनुसार होते हैं। जैसे-

1.बच्चा खेलता है।

2.घोड़ा भागता है।

इन वाक्यों में 'बच्चा', 'घोड़ा' कर्ता हैं तथा वाक्यों में कर्ता की ही प्रधानता है। अतः 'खेलता है', 'भागता है' ये कर्तृवाच्य हैं।

2.कर्मवाच्य- क्रिया के जिस रूप से वाक्य का उद्देश्य 'कर्म' प्रधान हो उसे कर्मवाच्य कहते हैं। जैसे-

1.भारत-पाक युद्ध में सहस्रों सैनिक मारे गए।

2.छात्रों द्वारा नाटक प्रस्तुत किया जा रहा है।

3.पुस्तक मेरे द्वारा पढ़ी गई।

4.बच्चों के द्वारा निबन्ध पढ़े गए।

इन वाक्यों में क्रियाओं में 'कर्म' की प्रधानता दर्शाई गई है। उनकी रूप-रचना भी कर्म के लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुसार हुई है। क्रिया के ऐसे रूप 'कर्मवाच्य' कहलाते हैं।

3.भाववाच्य-क्रिया के जिस रूप से वाक्य का उद्देश्य केवल भाव (क्रिया का अर्थ) ही जाना जाए वहाँ भाववाच्य होता है। इसमें कर्ता या कर्म की प्रधानता नहीं होती है। इसमें मुख्यतः अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है और साथ ही प्रायः निषेधार्थक वाक्य ही भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं। इसमें क्रिया सदैव पुल्लिङ, अन्य पुरुष के एक वचन की होती है।

प्रयोग

प्रयोग तीन प्रकार के होते हैं-
1. कर्तरि प्रयोग।
2. कर्मणि प्रयोग।
3. भावे प्रयोग।
1.कर्तरि प्रयोग- जब कर्ता के लिङ, वचन और पुरुष के अनुरूप क्रिया हो तो वह 'कर्तरि प्रयोग' कहलाता है। जैसे-
1.लड़का पत्र लिखता है।
2.लड़कियाँ पत्र लिखती है।
इन वाक्यों में 'लड़का' एकवचन, पुल्लिङ और अन्य पुरुष है और उसके साथ क्रिया भी 'लिखता है' एकवचन, पुल्लिङ और अन्य पुरुष है। इसी तरह 'लड़कियाँ पत्र लिखती हैं' दूसरे वाक्य में कर्ता बहुवचन, स्त्रीलिङ और अन्य पुरुष है तथा उसकी क्रिया भी 'लिखती हैं' बहुवचन स्त्रीलिङ और अन्य पुरुष है।
2.कर्मणि प्रयोग- जब क्रिया कर्म के लिङ, वचन और पुरुष के अनुरूप हो तो वह 'कर्मणि प्रयोग' कहलाता है। जैसे- 1.उपन्यास मेरे द्वारा पढ़ा गया।
2.छात्रों से निबन्ध लिखे गए।
3.युद्ध में हजारों सैनिक मारे गए।
इन वाक्यों में 'उपन्यास', 'सैनिक', कर्म कर्ता की स्थिति में हैं अतः उनकी प्रधानता है। इनमें क्रिया का रूप कर्म के लिङ, वचन और पुरुष के अनुरूप बदला है, अतः यहाँ 'कर्मणि प्रयोग' है।
3.भावे प्रयोग- कर्तरि वाच्य की सकर्मक क्रियाएँ, जब उनके कर्ता और कर्म दोनों विभक्तियुक्त हों तो वे 'भावे प्रयोग' के अन्तर्गत आती हैं। इसी प्रकार भाववाच्य की सभी क्रियाएँ भी भावे प्रयोग में मानी जाती है। जैसे-
1.अनीता ने बेल को सींचा।
2.लड़कों ने पत्रों को देखा है।

3.लड़कियों ने पुस्तकों को पढ़ा है।
4.अब उससे चला नही□जाता है।
इन वाक्यों की क्रियाओ□के लिङ्ग, वचन और पुरुष न कर्ता के अनुसार हैं और न ही कर्म के अनुसार, अपितु वे एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्य पुरुष हैं। इस प्रकार के 'प्रयोग भावे' प्रयोग कहलाते हैं।

वाच्य परिवर्तन

1.कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना-
(1) कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल में बदलना चाहिए।
(2) उस परिवर्तित क्रिया-रूप के साथ काल, पुरुष, वचन और लिङ्ग के अनुरूप जाना क्रिया का रूप जोड़ना चाहिए।
(3) इनमें 'से' अथवा 'के द्वारा' का प्रयोग करना चाहिए। जैसे-
कर्तृवाच्य कर्मवाच्य
1.श्यामा उपन्यास लिखती है। श्यामा से उपन्यास लिखा जाता है।
2.श्यामा ने उपन्यास लिखा। श्यामा से उपन्यास लिखा गया।
3.श्यामा उपन्यास लिखेगी। श्यामा से (के द्वारा) उपन्यास लिखा जाएगा।
2.कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना-
(1) इसके लिए क्रिया अन्य पुरुष और एकवचन में रखनी चाहिए।
(2) कर्ता में करण कारक की विभक्ति लगानी चाहिए।
(3) क्रिया को सामान्य भूतकाल में लाकर उसके काल के अनुरूप जाना क्रिया का रूप जोड़ना चाहिए।
(4) आवश्यकतानुसार निषेधसूचक 'नही□का प्रयोग करना चाहिए। जैसे-
कर्तृवाच्य भाववाच्य
1.बच्चे नही□दौड़ते। बच्चों से दौड़ा नही□जाता।
2.पक्षी नही□उड़ते। पक्षियों से उड़ा नही□जाता।
3.बच्चा नही□सोया। बच्चे से सोया नही□जाता।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=13&booktype=free

अध्याय 13

क्रिया-विशेषण

क्रिया-विशेषण- जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं वे क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जैसे- 1.सोहन सुन्दर लिखता है। 2.गौरव यहाँ रहता है। 3.सङ्गीता प्रतिदिन पढ़ती है। इन वाक्यों में 'सुन्दर', 'यहाँ' और 'प्रतिदिन' शब्द क्रिया की विशेषता बतला रहे हैं। अतः ये शब्द क्रिया-विशेषण हैं।

अर्थानुसार क्रिया-विशेषण के निम्नलिखित चार भेद हैं-

1. कालवाचक क्रिया-विशेषण।
2. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण।
3. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण।
4. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण।

1.कालवाचक क्रिया-विशेषण- जिस क्रिया-विशेषण शब्द से कार्य के होने का समय ज्ञात हो वह कालवाचक क्रिया-विशेषण कहलाता है। इसमें बहुधा ये शब्द प्रयोग में आते हैं- यदा, कदा, जब, तब, हमेशा, तभी, तत्काल, निरन्तर, शीघ्र, पूर्व, बाद, पीछे, घड़ी-घड़ी, अब, तत्पश्चात्, तदनन्तर, कल, कई बार, अभी फिर कभी आदि।

2.स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- जिस क्रिया-विशेषण शब्द द्वारा क्रिया के होने के स्थान का बोध हो वह स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहलाता है। इसमें बहुधा ये शब्द प्रयोग में आते हैं- भीतर, बाहर, अन्दर, यहाँ, वहाँ, किधर, उधर, इधर, कहाँ, जहाँ, पास, दूर, अन्यत्र, इस ओर, उस ओर, दाएँ, बाएँ, ऊपर, नीचे आदि।

3.परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण-जो शब्द क्रिया का परिमाण बतलाते हैं वे 'परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण' कहलाते हैं। इसमें बहुधा थोड़ा-थोड़ा, अत्यन्त, अधिक, अल्प, बहुत, कुछ, पर्याप्त, प्रभूत, कम, न्यून, बूँद-बूँद, स्वल्प, केवल, प्रायः अनुमानतः, सर्वथा आदि शब्द प्रयोग में आते हैं।

कुछ शब्दों का प्रयोग परिमाणवाचक विशेषण और परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण दोनों में समान रूप से किया जाता है। जैसे-थोड़ा, कम, कुछ काफी आदि।

4.रीतिवाचक क्रिया-विशेषण- जिन शब्दों के द्वारा क्रिया के सम्पन्न होने की रीति का बोध होता है वे 'रीतिवाचक क्रिया-विशेषण' कहलाते हैं। इनमें बहुधा ये शब्द प्रयोग में आते हैं- अचानक, सहसा, एकाएक, झटपट, आप ही, ध्यानपूर्वक, धड़ाधड़, यथा, तथा, ठीक, सचमुच, अवश्य, वास्तव में, निस्सन्देह, बेशक, शायद, सम्भव हैं, कदाचित्, बहुत करके, हाँ, ठीक, सच, जी, जरूर, अतएव, किसलिए, क्योंकि, नहीं, न, मत, कभी नहीं, कदापि नहीं आदि।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=14&booktype=free

अध्याय 14

सम्बन्धबोधक अव्यय

सम्बन्धबोधक अव्यय- जिन अव्यय शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध जाना जाता है, वे सम्बन्धबोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे- 1. उसका साथ छोड़ दीजिए। 2.मेरे सामने से हट जा। 3.लालकिले पर तिरंगा लहरा रहा है। 4.वीर अभिमन्यु अंत तक शत्रु से लोहा लेता रहा। इनमें 'साथ', 'सामने', 'पर', 'तक' शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बता रहे हैं। अतः वे सम्बन्धबोधक अव्यय है।

अर्थ के अनुसार सम्बन्धबोधक अव्यय के निम्नलिखित भेद हैं-

1. कालवाचक- पहले, बाद, आगे, पीछे।
2. स्थानवाचक- बाहर, भीतर, बीच, ऊपर, नीचे।
3. दिशावाचक- निकट, समीप, ओर, सामने।
4. साधनवाचक- निमित्त, द्वारा, जरिये।
5. विरोधसूचक- उलटे, विरुद्ध, प्रतिकूल।
6. समतासूचक- अनुसार, सदृश, समान, तुल्य, तरह।
7. हेतुवाचक- रहित, अथवा, सिवा, अतिरिक्त।
8. सहचरसूचक- समेत, संग, साथ।
9. विषयवाचक- विषय, बाबत, लेख।
10. संग्रहवाचक- समेत, भर, तक।

क्रिया-विशेषण और सम्बन्धबोधक अव्यय में अंतर

जब इनका प्रयोग संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ होता है तब ये सम्बन्धबोधक अव्यय होते हैं और जब ये क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं तब क्रिया-विशेषण होते हैं। जैसे-

(1) अंदर जाओ। (क्रिया विशेषण)

(2) दुकान के भीतर जाओ। (सम्बन्धबोधक अव्यय)

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=15&booktype=free

अध्याय 15

समुच्चयबोधक अव्यय

समुच्चयबोधक अव्यय- दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को मिलाने वाले अव्यय समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं। इन्हें 'योजक' भी कहते हैं। जैसे-

(1) श्रुति और गुंजन पढ़ रहे हैं।

(2) मुझे टेपरिकार्डर या घड़ी चाहिए।

(3) सीता ने बहुत मेहनत की किन्तु फिर भी सफल न हो सकी।

(4) बेशक वह धनवान है परन्तु है कंजूस।

इनमें 'और', 'या', 'किन्तु', 'परन्तु' शब्द आए हैं जोकि दो शब्दों अथवा दो वाक्यों को मिला रहे हैं। अतः ये समुच्चयबोधक अव्यय हैं।

समुच्चयबोधक के दो भेद हैं-

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक।
2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक

जिन समुच्चयबोधक शब्दों के द्वारा दो समान वाक्यांशों पदों और वाक्यों को परस्पर जोड़ा जाता है, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं। जैसे- 1.सुनंदा खड़ी थी और अलका बैठी थी। 2.ऋतेश गाएगा तो ऋतु तबला बजाएगी। इन वाक्यों में और, तो समुच्चयबोधक शब्दों द्वारा दो समान शब्द और वाक्य परस्पर जुड़े हैं।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक के भेद- समानाधिकरण समुच्चयबोधक चार प्रकार के होते हैं-

(क) संयोजक।

(ख) विभाजक।

(ग) विरोधसूचक।

(घ) परिणामसूचक।

(क) संयोजक- जो शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द संयोजक कहलाते हैं। और, तथा, एवं व आदि संयोजक शब्द हैं।

(ख) विभाजक- शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों में परस्पर विभाजन और विकल्प प्रकट करने वाले शब्द विभाजक या विकल्पक कहलाते हैं। जैसे-या, चाहे अथवा, अन्यथा, वा आदि।

(ग) विरोधसूचक- दो परस्पर विरोधी कथनों और उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्द

विरोधसूचक कहलाते हैं। जैसे-परन्तु, पर, किन्तु, मगर, बल्कि, लेकिन आदि।
(घ) परिणामसूचक- दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर परिणाम को दर्शाने वाले शब्द परिणामसूचक कहलाते हैं। जैसे- लतः, परिणामस्वरूप, इसलिए, अतः, अतएव, लस्वरूप, अन्यथा आदि।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक

किसी वाक्य के प्रधान और आश्रित उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं।
व्यधिकरण समुच्चयबोधक के भेद- व्यधिकरण समुच्चयबोधक चार प्रकार के होते हैं-
(क) कारणसूचक। (ख) सङ्केतसूचक। (ग) उद्देश्यसूचक। (घ) स्वरूपसूचक।
(क) कारणसूचक- दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर होने वाले कार्य का कारण स्पष्ट करने वाले शब्दों को कारणसूचक कहते हैं। जैसे- कि, क्योंकि, इसलिए, चूँकि, ताकि आदि।
(ख) सङ्केतसूचक- जो दो योजक शब्द दो उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें सङ्केतसूचक कहते हैं। जैसे- यदि....तो, जा...तो, यद्यपि....तथापि, यद्यपि...परन्तु आदि।
(ग) उद्देश्यसूचक- दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर उनका उद्देश्य स्पष्ट करने वाले शब्द उद्देश्यसूचक कहलाते हैं। जैसे- इसलिए कि, ताकि, जिससे कि आदि।
(घ) स्वरूपसूचक- मुख्य उपवाक्य का अर्थ स्पष्ट करने वाले शब्द स्वरूपसूचक कहलाते हैं। जैसे-यानी, मानो, कि, अर्थात् आदि।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=16&booktype=free

अध्याय 16

विस्मयादिबोधक अव्यय

विस्मयादिबोधक अव्यय- जिन शब्दों में हर्ष, शोक, विस्मय, ग्लानि, घृणा, लज्जा आदि भाव प्रकट होते हैं वे विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं। इन्हें 'द्योतक' भी कहते हैं। जैसे-
1.अहा ! क्या मौसम है।
2.उ ! कितनी गरमी पड़ रही है।
3. अरे ! आप आ गए ?
4.बाप रे बाप ! यह क्या कर ाला ?
5.छिः-छिः ! धिक्कार है तुम्हारे नाम को।

इनमें 'अहा', 'उ ', 'अरे', 'बाप-रे-बाप', 'छिः-छिः' शब्द आए हैं। ये सभी अनेक भावों को व्यक्त कर रहे हैं। अतः ये विस्मयादिबोधक अव्यय है। इन शब्दों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगता है।

प्रकट होने वाले भाव के आधार पर इसके निम्नलिखित भेद हैं-

(1) हर्षबोधक- अहा ! धन्य !, वाह-वाह !, ओह ! वाह ! शाबाश !

(2) शोकबोधक- आह !, हाय !, हाय-हाय !, हा, त्राहि-त्राहि !, बाप रे !

(3) विस्मयादिबोधक- हैं !, ऐ !, ओहो !, अरे, वाह !

(4) तिरस्कारबोधक- छिः !, हट !, धिक्, धत् !, छिः छिः !, चुप !

(5) स्वीकृतिबोधक- हाँ-हाँ !, अच्छा !, ठीक !, जी हाँ !, बहुत अच्छा !

(6) सम्बोधनबोधक- रे !, री !, अरे !, अरी !, ओ !, अजी !, हैलो !

(7) आशीर्वादबोधक- दीर्घायु हो !, जीते रहो !

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=17&booktype=free

अध्याय 17

शब्द-रचना

शब्द-रचना-हम स्वभावतः भाषा-व्यवहार में कम-से-कम शब्दों का प्रयोग करके अधिक-से-अधिक काम चलाना चाहते हैं। अतः शब्दों के आरम्भ अथवा अन्त में कुछ जोड़कर अथवा उनकी मात्राओं या स्वर में कुछ परिवर्तन करके नवीन-से-नवीन अर्थ-बोध कराना चाहते हैं। कभी-कभी दो अथवा अधिक शब्दांशों को जोड़कर नए अर्थ-बोध को स्वीकारते हैं। इस तरह एक शब्द से कई अर्थों की अभिव्यक्ति हेतु जो नए-नए शब्द बनाए जाते हैं उसे शब्द-रचना कहते हैं।

शब्द रचना के चार प्रकार हैं-

1. उपसर्ग लगाकर
2. प्रत्यय लगाकर
3. सन्धि द्वारा
4. समास द्वारा

उपसर्ग

वे शब्दांश जो किसी शब्द के आरम्भ में लगकर उनके अर्थ में विशेषता ला देते हैं अथवा उसके अर्थ को बदल देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे-परा-पराक्रम, पराजय, पराभव, पराधीन, पराभूत।

उपसर्गों को चार भागों में बाँटा जा सकता हैं-

(क) संस्कृत के उपसर्ग

(ख) हिन्दी के उपसर्ग

(ग) उर्दू के उपसर्ग

(घ) उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय

(क) संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ (में)	शब्द-रूप
अति	अधिक, ऊपर	अत्यन्त, अत्युत्तम, अतिरिक्त
अधि	ऊपर, प्रधानता	अधिकार, अध्यक्ष, अधिपति
अनु	पीछे, समान	अनुरूप, अनुज, अनुकरण
अप	बुरा, हीन	अपमान, अपयश, अपकार
अभि	सामने, अधिक पास	अभियोग, अभिमान, अभिभावक
अव	बुरा, नीचे	अवनति, अवगुण, अवशेष
आ	तक से, लेकर, उलटा	आजन्म, आगमन, आकाश
उत्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्कण्ठा, उत्कर्ष, उत्पन्न
उप	निकट, गौण	उपकार, उपदेश, उपचार, उपाध्यक्ष
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्जन, दुर्दशा, दुर्गम
दुस्	बुरा	दुश्चरित्र, दुस्साहस, दुर्गम
नि	अभाव, विशेष	नियुक्त, निबन्ध, निमग्न
निर्	बिना	निर्वाह, निर्मल, निर्जन
निस्	बिना	निश्चल, निश्छल, निश्चित
परा	पीछे, उलटा	परामर्श, पराधीन, पराक्रम

परि	सब ओर	परिपूर्ण, परिजन, परिवर्तन
प्र	आगे, अधिक, उत्कृष्ट	प्रयत्न, प्रबल, प्रसिद्ध
प्रति	सामने, उलटा, हरएक	प्रतिकूल, प्रत्येक, प्रत्यक्ष
वि	हीनता, विशेष	वियोग, विशेष, विधवा
सम्	पूर्ण, अच्छा	सञ्चय, सञ्जाति, सञ्स्कार
सु	अच्छा, सरल	सुगम, सुयश, स्वागत

(ख) हिन्दी के उपसर्ग

ये प्रायः सञ्स्कृत उपसर्गों के अपभ्रञ्श मात्र ही हैं।

उपसर्ग	अर्थ (में)	शब्द-रूप
अ	अभाव, निषेध	अजर, अछूत, अकाल
अन	रहित	अनपढ़, अनबन, अनजान
अध	आधा	अधमरा, अधखिला, अधपका
औ	रहित	औगुन, औतार, औघट
कु	बुराई	कुसञ्जा, कुकर्म, कुमति
नि	अभाव	नि□र, निहत्था, निकम्मा

(ग) उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ (में)	शब्द-रूप
कम	थोड़ा	कमबख्त, कमजोर, कमसिन
खुश	प्रसन्न, अच्छा	खुशबू, खुशदिल, खुशमिजाज
गैर	निषेध	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरकौम
दर	में	दरअसल, दरकार, दरमियान

ना	निषेध	नालायक, नापसद, नामुमकिन
बा	अनुसार	बामौका, बाकायदा, बाइज्जत
बद	बुरा	बदनाम, बदमाश, बदचलन
बे	बिना	बेईमान, बेचारा, बेअक्ल
ला	रहित	लापरवाह, लाचार, लावारिस
सर	मुख्य	सरकार, सरदार, सरपञ्च
हम	साथ	हमदर्दी, हमराज, हमदम
हर	प्रति	हरदिन, हरएक,हरसाल

(घ) उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले संस्कृत अव्यय

उपसर्ग	अर्थ (में)	शब्द-रूप
अ (व्यञ्जनों से पूर्व)	निषेध	अज्ञान, अभाव, अचेत
अन् (स्वरों से पूर्व)	निषेध	अनागत, अनर्थ, अनादि
स	सहित	सजल, सकल, सहर्ष
अधः	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोमुख
चिर	बहुत देर	चिरायु, चिरकाल, चिरञ्जीव
अन्तर	भीतर	अन्तरात्मा, अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्जातीय
पुनः	ि र	पुनर्गमन, पुनर्जन्म, पुनर्मिलन
पुरा	पुराना	पुरातत्व, पुरातन
पुरस्	आगे	पुरस्कार, पुरस्कृत
तिरस्	बुरा, हीन	तिरस्कार, तिरोभाव
सत्	श्रेष्ठ	सत्कार, सज्जन, सत्कार्य

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=18&booktype=free

अध्याय 18

प्रत्यय

प्रत्यय- जो शब्दांश शब्दों के अन्त में लगकर उनके अर्थ को बदल देते हैं वे प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे-जलज, पङ्कज आदि। जल=पानी तथा ज=जन्म लेने वाला। पानी में जन्म लेने वाला अर्थात् कमल। इसी प्रकार पङ्क शब्द में ज प्रत्यय लगकर पङ्कज अर्थात कमल कर देता है। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत प्रत्यय।
2. तद्धित प्रत्यय।

1. कृत प्रत्यय

जो प्रत्यय धातुओं के अन्त में लगते हैं वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत प्रत्यय के योग से बने शब्दों को (कृत+अन्त) कृदन्त कहते हैं। जैसे-राखन+हारा=राखनहारा, घट+इया=घटिया, लिख+आवट=लिखावट आदि।

(क) कर्तृवाचक कृदन्त- जिस प्रत्यय से बने शब्द से कार्य करने वाले अर्थात कर्ता का बोध हो, वह कर्तृवाचक कृदन्त कहलाता है। जैसे-'पढ़ना'। इस सामान्य क्रिया के साथ वाला प्रत्यय लगाने से 'पढ़नेवाला' शब्द बना।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
वाला	पढ़नेवाला, लिखनेवाला,रखवाला	हारा	राखनहारा, खेवनहारा, पालनहारा
आऊ	बिकाऊ, टिकाऊ, चलाऊ	आक	तैराक
आका	लड़का, धड़ाका, धमाका	आड़ी	अनाड़ी, खिलाड़ी, अगाड़ी
आलू	आलु, झगड़ालू, दयालु, कृपालु	ऊ	उड़ाऊ, कमाऊ, खाऊ
एरा	लुटेरा, सपेरा	इया	बढ़िया, घटिया
ऐया	गवैया, रखैया, लुटैया	अक	धावक, सहायक, पालक

(ख) कर्मवाचक कृदन्त- जिस प्रत्यय से बने शब्द से किसी कर्म का बोध हो वह कर्मवाचक कृदन्त कहलाता है। जैसे-गा में ना प्रत्यय लगाने से गाना, सूँघ में ना प्रत्यय लगाने से सूँघना और बिछ में औना प्रत्यय लगाने से बिछौना बना है।

(ग) करणवाचक कृदन्त- जिस प्रत्यय से बने शब्द से क्रिया के साधन अर्थात करण का बोध हो वह करणवाचक कृदन्त कहलाता है। जैसे-रेत में ई प्रत्यय लगाने से रेती बना।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
आ	भटका, भूला, झूला	ई	रेती, □ाँसी, भारी
ऊ	झाड़ू	न	बेलन, झाड़न, बन्धन
नी	धौंकनी करतनी, सुमिरनी		

(घ) भाववाचक कृदन्त- जिस प्रत्यय से बने शब्द से भाव अर्थात् क्रिया के व्यापार का बोध हो वह भाववाचक कृदन्त कहलाता है। जैसे-सजा में आवट प्रत्यय लगाने से सजावट बना।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
अन	चलन, मनन, मिलन	औती	मनौती, □ रौती, चुनौती
आवा	भुलावा,छलावा, दिखावा	अन्त	भिड़न्त, गढ़न्त
आई	कमाई, चढ़ाई, लड़ाई	आवट	सजावट, बनावट, रुकावट
आहट	घबराहट,चिल्लाहट		

(ङ) क्रियावाचक कृदन्त- जिस प्रत्यय से बने शब्द से क्रिया के होने का भाव प्रकट हो वह क्रियावाचक कृदन्त कहलाता है। जैसे-भागता हुआ, लिखता हुआ आदि। इसमें मूल धातु के साथ ता लगाकर बाद में हुआ लगा देने से वर्तमानकालिक क्रियावाचक कृदन्त बन जाता है। क्रियावाचक कृदन्त केवल पुल्लिङ्ग और एकवचन में प्रयुक्त होता है।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
ता	□ूबता, बहता, रमता, चलता	ता	हुआ आता हुआ, पढ़ता हुआ
या	खोया, बोया	आ	सूखा, भूला, बैठा
कर	जाकर, देखकर	ना	दौड़ना, सोना

2. तद्धित प्रत्यय

जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के अन्त में लगकर नए शब्द बनाते हैं तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। इनके योग से बने शब्दों को 'तद्धितान्त' अथवा तद्धित शब्द कहते हैं।

जैसे-अपना+पन=अपनापन, दानव+ता=दानवता आदि।

(क) कर्तृवाचक तद्धित- जिससे किसी कार्य के करने वाले का बोध हो। जैसे- सुनार, कहार आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
क	पाठक, लेखक, लिपिक	आर	सुनार, लुहार, कहार
कार	पत्रकार, कलाकार, चित्रकार	इया	सुविधा, दुखिया, आढ़तिया
एरा	सपेरा, ठठेरा, चितेरा	आ	मछुआ, गेरुआ, ठलुआ
वाला	टोपीवाला घरवाला, गाड़ीवाला	दार	ईमानदार, दुकानदार, कर्जदार
हारा	लकड़हारा, पनिहारा, मनिहार	ची	मशालची, खजानची, मोची
गर	कारीगर, बाजीगर, जादूगर		

(ख) भाववाचक तद्धित- जिससे भाव व्यक्त हो। जैसे-सर्रा□ ा, बुढ़ापा, स□ात, प्रभुता आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
पन	बचपन, लड़कपन, बालपन	आ	बुलावा, सर्रा□ ा
आई	भलाई, बुराई, □ठाई	आहट	चिकनाहट, कड़वाहट, घबराहट
इमा	लालिमा, महिमा, अरुणिमा	पा	बुढ़ापा, मोटापा
ई	गरमी, सरदी,गरीबी	औती	बपौती

(ग) स□वाचक तद्धित- जिससे स□ का बोध हो। जैसे-ससुराल, भतीजा, चचेरा आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
आल	ससुराल, ननिहाल	एरा	ममेरा,चचेरा, □ु □े रा
जा	भानजा, भतीजा	इक	नैतिक, धार्मिक, आर्थिक

(घ) ऊनता (लघुता) वाचक तद्धित- जिससे लघुता का बोध हो। जैसे-लुटिया।

प्रत्ययय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
इया	लुटिया, □बिया, खटिया	ई	कोठरी, टोकनी, □ोलकी
टी, टा	लँगोटी, कछौटी,कलूटा	ड़ी, ड़ा	पगड़ी, टुकड़ी, बछड़ा

(ङ) गणनावाचक तद्धति- जिससे सङ्ख्या का बोध हो। जैसे-इकहरा, पहला, पाँचवाँ आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
हरा	इकहरा, दुहरा, तिहरा	ला	पहला
रा	दूसरा, तीसरा	था	चौथा

(च) सादृश्यवाचक तद्धित- जिससे समता का बोध हो। जैसे-सुनहरा।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
सा	पीला-सा, नीला-सा, काला-सा	हरा	सुनहरा, रुपहरा

(छ) गुणवाचक तद्धति- जिससे किसी गुण का बोध हो। जैसे-भूख, विषैला, कुलवत्ता आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
आ	भूखा, प्यासा, ठण्डा,मीठा	ई	धनी, लोभी, क्रोधी
ईय	वाञ्छनीय, अनुकरणीय	ईला	रङ्गीला, सजीला
ऐला	विषैला, कसैला	लु	कृपालु, दयालु
वत्ता	दयावत्ता, कुलवत्ता	वान	गुणवान, रूपवान

(ज) स्थानवाचक तद्धति- जिससे स्थान का बोध हो. जैसे-पञ्जाबी, जबलपुरिया, दिल्लीवाला आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
ई	पञ्जाबी, बङ्गाली, गुजराती	इया	कलकतिया, जबलपुरिया
वाल	वाला □रेवाला, दिल्लीवाला		

कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय में अन्तर

कृत प्रत्यय- जो प्रत्यय धातु या क्रिया के अन्त में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं कृत प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे-लिखना, लिखाई, लिखावट।

तद्धित प्रत्यय- जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण में जुड़कर नया शब्द बनाते ह□वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे-नीति-नैतिक, काला-कालिमा, राष्ट्र-राष्ट्रीयता आदि।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=19&booktype=free

अध्याय 19

संधि

संधि-संधि शब्द का अर्थ है मेल। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है। जैसे-सम्+तोष=संतोष। देव+इंद्र=देवेंद्र। भानु+उदय=भानूदय।
संधि के भेद-संधि तीन प्रकार की होती हैं-
1. स्वर संधि।
2. व्यंजन संधि।
3. विसर्ग संधि।

1. स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर-संधि कहते हैं। जैसे-
विद्या+आलय=विद्यालय।
स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं-

(क) दीर्घ संधि

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई, और ऊ हो जाते हैं। जैसे-
(क) अ+अ=आ धर्म+अर्थ=धर्मार्थ, अ+आ=आ-हिम+आलय=हिमालय।
आ+अ=आ आ विद्या+अर्थी=विद्यार्थी आ+आ=आ-विद्या+आलय=विद्यालय।
(ख) इ और ई की संधि-
इ+इ=ई- रवि+इंद्र=रवींद्र, मुनि+इंद्र=मुनींद्र।
इ+ई=ई- गिरि+ईश=गिरीश मुनि+ईश=मुनीश।
ई+इ=ई- मही+इंद्र=महींद्र नारी+इंदु=नारींदु
ई+ई=ई- नदी+ईश=नदीश मही+ईश=महीश

(ग) उ और ऊ की सन्धि-

उ+उ=ऊ- भानु+उदय=भानूदय विधु+उदय=विधूदय

उ+ऊ=ऊ- लघु+ऊर्मि=लघूर्मि सिधु+ऊर्मि=सिन्धूर्मि

ऊ+उ=ऊ- वधू+उत्सव=वधूत्सव वधू+उल्लेख=वधूल्लेख

ऊ+ऊ=ऊ- भू+ऊर्ध्व=भूर्ध्व वधू+ऊर्जा=वधूर्जा

(ख) गुण सन्धि

इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए, उ, ऊ हो तो ओ, तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-सन्धि कहते हैं जैसे-

(क) अ+इ=ए- नर+इन्द्र=नरेंद्र अ+ई=ए- नर+ईश=नरेश

आ+इ=ए- महा+इन्द्र=महेंद्र आ+ई=ए महा+ईश=महेश

(ख) अ+ई=ओ ज्ञान+उपदेश=ज्ञानोपदेश आ+उ=ओ महा+उत्सव=महोत्सव

अ+ऊ=ओ जल+ऊर्मि=जलोर्मि आ+ऊ=ओ महा+ऊर्मि=महोर्मि

(ग) अ+ऋ=अर् देव+ऋषि=देवर्षि

(घ) आ+ऋ=अर् महा+ऋषि=महर्षि

(ग) वृद्धि सन्धि

अ आ का ए ऐ से मेल होने पर ऐ अ आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं। जैसे-

(क) अ+ए=ऐ एक+एक=एकैक अ+ऐ=ऐ मत+ऐक्य=मतैक्य

आ+ए=ऐ सदा+एव=सदैव आ+ऐ=ऐ महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य

(ख) अ+ओ=औ वन+ओषधि=वनौषधि आ+ओ=औ महा+औषध=महौषधि

अ+औ=औ परम+औषध=परमौषध आ+औ=औ महा+औषध=महौषध

(घ) यण सन्धि

(क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है। (ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है। (ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-सन्धि कहते हैं।

इ+अ=य्+अ यदि+अपि=यद्यपि ई+आ=य्+आ इति+आदि=इत्यादि।

ई+अ=य्+अ नदी+अर्पण=नद्यर्पण ई+आ=य्+आ देवी+आगमन=देव्यागमन

(घ) उ+अ=व्+अ अनु+अय=अन्वय उ+आ=व्+आ सु+आगत=स्वागत
उ+ए=व्+ए अनु+एषण=अन्वेषण ऋ+अ=र्+आ पितृ+आज्ञा=पित्राज्ञा
(ङ) अयादि सन्धि- ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि सन्धि कहते हैं।
(क) ए+अ=अय्+अ ने+अन+नयन (ख) ऐ+अ=आय्+अ गै+अक=गायक
(ग) ओ+अ=अव्+अ पो+अन=पवन (घ) औ+अ=आव्+अ पौ+अक=पावक
औ+इ=आव्+इ नौ+इक=नाविक

2. व्यञ्जन सन्धि

व्यञ्जन का व्यञ्जन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे-शरत्+चन्द्र=शरच्चन्द्र।
(क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे-
क्+ग=ग्ग दिक्+गज=दिग्गज। क्+ई=गी वाक्+ईश=वागीश
च्+अ=ज् अच्+अन्त=अजन्ता ट्+आ=ा षट्+आनन=ष ानन
प+ज+ब्ज अप्+ज=अब्ज
(ख) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे-
क्+म=ङ् वाक्+मय=वाङ्मय च्+न=ञ् अच्+नाश=अञ्नाश
ट्+म=ण् षट्+मास=षण्मास त्+न=न् उत्+नयन=उन्नयन
प्+म्=म् अप्+मय=अम्मय
(ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे-
त्+भ=द्भ सत्+भावना=सद्भावना त्+ई=दी जगत्+ईश=जगदीश
त्+भ=द्भ भगवत्+भक्ति=भगवद्भक्ति त्+र=द्र तत्+रूप=तद्रूप
त्+ध=द्ध सत्+धर्म=सद्धर्म
(घ) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे-
त्+च=च्च उत्+चारण=उच्चारण त्+ज=ज्ज सत्+जन=सज्जन
त्+झ=ज्झ उत्+झटिका=उज्झटिका त्+ट=ट्ट तत्+टीका=तट्टीका

त्+ड=ड्ड उत्+डयन=उड्डयन त्+ल=ल्ल उत्+लास=उल्लास

(ङ) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे-

त्+श्=च्छ उत्+श्वास=उच्छ्वास त्+श=च्छ उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट

त्+श=च्छ सत्+शास्त्र=सच्छास्त्र

(च) त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे-

त्+ह=द्ध उत्+हार=उद्धार त्+ह=द्ध उत्+हरण=उद्धरण

त्+ह=द्ध तत्+हित=तद्धित

(छ) स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है। जैसे-

अ+छ=अच्छ स्व+छंद=स्वच्छंद आ+छ=आच्छ आ+छादन=आच्छादन

इ+छ=इच्छ संधि+छेद=संधिच्छेद उ+छ=उच्छ अनु+छेद=अनुच्छेद

(ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे-

म्+च्=ं किम्+चित=किंचित म्+क=ं किम्+कर=किंकर

म्+क=ं सम्+कल्प=संकल्प म्+च=ं सम्+चय=संचय

म्+त=ं सम्+तोष=संतोष म्+ब=ं सम्+बंध=संबंध

म्+प=ं सम्+पूर्ण=संपूर्ण

(झ) म् के बाद म का द्वित्व हो जाता है। जैसे-

म्+म=म्म सम्+मति=सम्मति म्+म=म्म सम्+मान=सम्मान

(ञ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे-

म्+य=ं सम्+योग=संयोग म्+र=ं सम्+रक्षण=संरक्षण

म्+व=ं सम्+विधान=संविधान म्+व=ं सम्+वाद=संवाद

म्+श=ं सम्+शय=संशय म्+ल=ं सम्+लग्न=संलग्न

म्+स=ं सम्+सार=संसार

(ट) ऋ,र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता। जैसे-

र्+न=ण परि+नाम=परिणाम र्+म=ण प्र+मान=प्रमाण

(ठ) स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे-

भ्+स्=ष अभि+सेक=अभिषेक नि+सिद्ध=निषिद्ध वि+सम+विषम

3. विसर्ग-संधि

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं। जैसे-मनः+अनुकूल=मनोनुकूल।

(क) विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे-
मनः+अनुकूल=मनोनुकूल अधः+गति=अधोगति मनः+बल=मनोबल

(ख) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे-
निः+आहार=निराहार निः+आशा=निराशा निः+धन=निर्धन

(ग) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे-
निः+चल=निश्चल निः+छल=निश्छल दुः+शासन=दुश्शासन

(घ)विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। जैसे-
नमः+ते=नमस्ते निः+सन्तान=निस्सन्तान दुः+साहस=दुस्साहस

(ङ) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, □ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। जैसे-
निः+कलङ्क=निष्कलङ्क चतुः+पाद=चतुष्पाद निः+□ल=निष्□ल

(□)विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे-
निः+रोग=निरोग निः+रस=नीरस

(छ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, □ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे-
अन्तः+करण=अन्तःकरण

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=20&booktype=free

अध्याय 20

समास

समास का तात्पर्य है 'सक्षिप्तीकरण'। दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एव□सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे-'रसोई के लिए घर' इसे हम 'रसोईघर' भी कह सकते हैं।

सामासिक शब्द- समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहते हैं। समास होने के बाद विभक्तियों के चिह्न (परसर्ग) लुप्त हो जाते हैं। जैसे-राजपुत्र।

समास-विग्रह- सामासिक शब्दों के बीच के सबन्ध को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है। जैसे-राजपुत्र-राजा का पुत्र।

पूर्वपद और उत्तरपद- समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। जैसे-गगाजल। इसमें गगा पूर्वपद और जल उत्तरपद है।

समास के भेद

समास के चार भेद हैं-

1. अव्ययीभाव समास।
2. तत्पुरुष समास।
3. द्वद्व समास।
4. बहुव्रीहि समास।

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास का पहला पद प्रधान हो और वह अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे-यथामति (मति के अनुसार), आमरण (मृत्यु कर) इनमें यथा और आ अव्यय हैं।

कुछ अन्य उदाहरण-

आजीवन - जीवन-भर, यथासामर्थ्य - सामर्थ्य के अनुसार
यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार, यथाविधि विधि के अनुसार
यथाक्रम - क्रम के अनुसार, भरपेट पेट भरकर
हररोज़ - रोज़-रोज़, हाथोंहाथ - हाथ ही हाथ में
रातोंरात - रात ही रात में, प्रतिदिन - प्रत्येक दिन
बेशक - शक के बिना, नि□र - □र के बिना
निस्सदेह - सदेह के बिना, हरसाल - हरेक साल

अव्ययीभाव समास की पहचान- इसमें समस्त पद अव्यय बन जाता है अर्थात समास होने के बाद उसका रूप कभी नही बदलता है। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नही लगता। जैसे- ऊपर के समस्त शब्द है।

2. तत्पुरुष समास

जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद गौण हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे-तुलसीदासकृत=तुलसी द्वारा कृत (रचित)
ज्ञातव्य- विग्रह में जो कारक प्रकट हो उसी कारक वाला वह समास होता है। विभक्तियों के नाम के अनुसार इसके छह भेद हैं-
(1) कर्म तत्पुरुष गिरहकट गिरह को काटने वाला
(2) करण तत्पुरुष मनचाहा मन से चाहा
(3) सम्प्रदान तत्पुरुष रसोईघर रसोई के लिए घर
(4) अपादान तत्पुरुष देशनिकाला देश से निकाला
(5) सम्बन्ध तत्पुरुष गंगाजल गंगा का जल
(6) अधिकरण तत्पुरुष नगरवास नगर में वास

(क) नञ तत्पुरुष समास

जिस समास में पहला पद निषेधात्मक हो उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे-
समस्त पद समास-विग्रह समस्त पद समास-विग्रह
असभ्य न सभ्य अनन्त न अन्त
अनादि न आदि असम्भव न सम्भव

(ख) कर्मधारय समास

जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्ववद व उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का सम्बन्ध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे-

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समात विग्रह
चन्द्रमुख	चन्द्र जैसा मुख	कमलनयन	कमल के समान नयन
देहलता	देह रूपी लता	दहीबड़ा	दही में डूबा बड़ा

नीलकमल	नीला कमल	पीताम्बर	पीला अम्बर (वस्त्र)
सज्जन	सत् (अच्छा) जन	नरसिंह	नरों में सिंह के समान

(ग) द्विगु समास

जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इससे समूह अथवा समाहार का बोध होता है। जैसे-

समस्त पद	समात-विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
नवग्रह	नौ ग्रहों का मसूह	दोपहर	दो पहरों का समाहार
त्रिलोक	तीनों लोकों का समाहार	चौमासा	चार मासों का समूह
नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह	शताब्दी	सौ अब्दो (सालों) का समूह
अठन्नी	आठ आनों का समूह		

3. द्वन्द्व समास

जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर 'और', अथवा, 'या', एवं लगता है, वह द्वन्द्व समास कहलाता है। जैसे-

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य	अन्न-जल	अन्न और जल
सीता-राम	सीता और राम	खरा-खोटा	खरा और खोटा
ऊँच-नीच	ऊँच और नीच	राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण

4. बहुव्रीहि समास

जिस समास के दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेतिक अर्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे-

समस्त पद	समास-विग्रह
दशानन	दश है आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण
नीलकण्ठ	नीला है कण्ठ जिसका अर्थात् शिव
सुलोचना	सुन्दर है लोचन जिसके अर्थात् मेघनाद की पत्नी
पीताम्बर	पीले है अम्बर (वस्त्र) जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण
लम्बोदर	लम्बा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेशजी
दुरात्मा	बुरी आत्मा वाला (कोई दुष्ट)
श्वेताम्बर	श्वेत है जिसके अम्बर (वस्त्र) अर्थात् सरस्वती

सन्धि और समास में अन्तर

सन्धि वर्णों में होती है। इसमें विभक्ति या शब्द का लोप नहीं होता है। जैसे-देव+आलय=देवालय। समास दो पदों में होता है। समास होने पर विभक्ति या शब्दों का लोप भी हो जाता है। जैसे-माता-पिता=माता और पिता।
कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अन्तर- कर्मधारय में समस्त-पद का एक पद दूसरे का विशेषण होता है। इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है। जैसे-नीलकण्ठ=नीला कण्ठ। बहुव्रीहि में समस्त पद के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य का सम्बन्ध नहीं होता अपितु वह समस्त पद ही किसी अन्य संज्ञादि का विशेषण होता है। इसके साथ ही शब्दार्थ गौण होता है और कोई भिन्नार्थ ही प्रधान हो जाता है। जैसे-नील+कण्ठ=नीला है कण्ठ जिसका अर्थात शिव।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=21&booktype=free

अध्याय 21

पद-परिचय

पद-परिचय- वाक्यगत शब्दों के रूप और उनका पारस्परिक सम्बन्ध बताने में जिस प्रक्रिया की आवश्यकता पड़ती है वह पद-परिचय या शब्दबोध कहलाता है।
परिभाषा-वाक्यगत प्रत्येक पद (शब्द) का व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है।

शब्द आठ प्रकार के होते हैं-

1.सञ्ज्ञा- भेद, लिङ्ग, वचन, कारक, क्रिया अथवा अन्य शब्दों से सम्बन्ध।

2.सर्वनाम- भेद, पुरुष, लिङ्ग, वचन, कारक, क्रिया अथवा अन्य शब्दों से सम्बन्ध। किस सञ्ज्ञा के स्थान पर आया है (यदि पता हो)।

3.क्रिया- भेद, लिङ्ग, वचन, प्रयोग, धातु, काल, वाच्य, कर्ता और कर्म से सम्बन्ध।

4.विशेषण- भेद, लिङ्ग, वचन और विशेष्य की विशेषता।

5.क्रिया-विशेषण- भेद, जिस क्रिया की विशेषता बताई गई हो उसके बारे में निर्देश।

6.सम्बन्धबोधक- भेद, जिससे सम्बन्ध है उसका निर्देश।

7.समुच्चयबोधक- भेद, अन्वित शब्द, वाक्यांश या वाक्य।

8.विस्मयादिबोधक- भेद अर्थात कौन-सा भाव स्पष्ट कर रहा है।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=22&booktype=free

अध्याय 22

शब्द-ज्ञान

1. पर्यायवाची शब्द

किसी शब्द-विशेष के लिए प्रयुक्त समानार्थक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। यद्यपि पर्यायवाची शब्द समानार्थी होते हैं किन्तु भाव में एक-दूसरे से किञ्चित भिन्न होते हैं।

1.अमृत- सुधा, सोम, पीयूष, अमिय।

2.असुर- राक्षस, दैत्य, दानव, निशाचर।

3.अग्नि- आग, अनल, पावक, वह्नि।

4.अश्व- घोड़ा, हय, तुरङ्ग, बाजी।

5.आकाश- गगन, नभ, आसमान, व्योम, अम्बर।

6.आँख- नेत्र, दृग, नयन, लोचन।

7.इच्छा- आकाङ्क्षा, चाह, अभिलाषा, कामना।

8.इन्द्र- सुरेश, देवेंद्र, देवराज, पुरन्दर।

9.ईश्वर- प्रभु, परमेश्वर, भगवान, परमात्मा।

10.कमल- जलज, पङ्कज, सरोज, राजीव, अरविन्द।

11.गरमी- ग्रीष्म, ताप, निदाघ, ऊष्मा।

12.गृह- घर, निकेतन, भवन, आलय।

13.गङ्गा- सुरसरि, त्रिपथगा, देवनदी, जाह्नवी, भागीरथी।
14.चन्द्र- चाँद, चन्द्रमा, विधु, शशि, राकेश।
15.जल- वारि, पानी, नीर, सलिल, तोय।
16.नदी- सरिता, तटिनी, तरङ्गिणी, निर्झरिणी।
17.पवन- वायु, समीर, हवा, अनिल।
18.पत्नी- भार्या, दारा, अर्धांगिनी, वामा।
19.पुत्र- बेटा, सुत, तनय, आत्मज।
20.पुत्री-बेटी, सुता, तनया, आत्मजा।
21.पृथ्वी- धरा, मही, धरती, वसुधा, भूमि, वसुन्धरा।
22.पर्वत- शैल, नग, भूधर, पहाड़।
23.बिजली- चपला, चञ्चला, दामिनी, सौदामनी।
24.मेघ- बादल, जलधर, पयोद, पयोधर, घन।
25.राजा- नृप, नृपति, भूपति, नरपति।
26.रजनी- रात्रि, निशा, यामिनी, विभावरी।
27.सर्प- साँप, अहि, भुजङ्ग, विषधर।
28.सागर- समुद्र, उदधि, जलधि, वारिधि।
29.सिंह- शेर, वनराज, शार्दूल, मृगराज।
30.सूर्य- रवि, दिनकर, सूरज, भास्कर।
31.स्त्री- ललना, नारी, कामिनी, रमणी, महिला।
32.शिक्षक- गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।
33.हाथी- कुञ्जर, गज, द्विप, करी, हस्ती।

2. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1	जिसे देखकर □र (भय) लगे	□रावना, भयानक
2	जो स्थिर रहे	स्थावर
3	ज्ञान देने वाली	ज्ञानदा
4	भूत-वर्तमान-भविष्य को देखने (जानने) वाले	त्रिकालदर्शी
5	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
6	जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य

7	पन्द्रह दिन में एक बार होने वाला	पाक्षिक
8	अच्छे चरित्र वाला	सच्चरित्र
9	आज्ञा का पालन करने वाला	आज्ञाकारी
10	रोगी की चिकित्सा करने वाला	चिकित्सक
11	सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
12	दूसरों पर उपकार करने वाला	उपकारी
13	जिसे कभी बुढापा न आये	अजर
14	दया करने वाला	दयालु
15	जिसका आकार न हो	निराकार
16	जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
17	जहाँ पहुँचा न जा सके	अगम, अगम्य
18	जिसे बहुत कम ज्ञान हो, थोड़ा जानने वाला	अल्पज्ञ
19	मास में एक बार आने वाला	मासिक
20	जिसके कोई सन्तान न हो	निस्सन्तान
21	जो कभी न मरे	अमर
22	जिसका आचरण अच्छा न हो	दुराचारी
23	जिसका कोई मूल्य न हो	अमूल्य
24	जो वन में घूमता हो	वनचर
25	जो इस लोक से बाहर की बात हो	अलौकिक
26	जो इस लोक की बात हो	लौकिक
27	जिसके नीचे रेखा हो	रेखाङ्कित
28	जिसका सम्बन्ध पश्चिम से हो	पाश्चात्य
29	जो स्थिर रहे	स्थावर
30	दुखान्त नाटक	त्रासदी

31	जो क्षमा करने के योग्य हो	क्षम्य
32	हिंसा करने वाला	हिंसक
33	हित चाहने वाला	हितैषी
34	हाथ से लिखा हुआ	हस्तलिखित
35	सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
36	जो स्वयं पैदा हुआ हो	स्वयंभू
37	जो शरण में आया हो	शरणागत
38	जिसका वर्णन न किया जा सके	वर्णनातीत
39	साग-पात खाने वाला	शाकाहारी
40	जिसकी पत्नी मर गई हो	विधुर
41	जिसका पति मर गया हो	विधवा
42	सौतेली माँ	विमाता
43	व्याकरण जाननेवाला	वैयाकरण
44	रचना करने वाला	रचयिता
45	खून से रँगा हुआ	रक्तरंजित
46	अत्यंत सुन्दर स्त्री	रूपसी
47	कीर्तिमान पुरुष	यशस्वी
48	कम खर्च करने वाला	मितव्ययी
49	मछली की तरह आँखों वाली	मीनाक्षी
50	मयूर की तरह आँखों वाली	मयूराक्षी
51	बच्चों के लिए काम की वस्तु	बालोपयोगी
52	जिसकी बहुत अधिक चर्चा हो	बहुचर्चित
53	जिस स्त्री के कभी संतान न हुई हो	वंध्या (बाँझ)
54	जल से भरा हुआ	जलिल

55	प्रिय बोलने वाली स्त्री	प्रियम्वदा
56	जिसकी उपमा न हो	निरुपम
57	जो थोड़ी देर पहले पैदा हुआ हो	नवजात
58	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
59	नगर में वास करने वाला	नागरिक
60	रात में घूमने वाला	निशाचर
61	ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला	नास्तिक
62	मांस न खाने वाला	निरामिष
63	बिलकुल बरबाद हो गया हो	ध्वस्त
64	जिसकी धर्म में निष्ठा हो	धर्मनिष्ठ
65	देखने योग्य	दर्शनीय
66	बहुत तेज चलने वाला	द्रुतगामी
67	जो किसी पक्ष में न हो	तटस्थ
68	तत्त्तव को जानने वाला	तत्त्तवज्ञ
69	तप करने वाला	तपस्वी
70	जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
71	जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो	जितेंद्रिय
72	चिंता में डूबा हुआ	चिंतित
73	जो बहुत समय कर ठहरे	चिरस्थायी
74	जिसकी चार भुजाएँ हों	चतुर्भुज
75	हाथ में चक्र धारण करनेवाला	चक्रपाणि
76	जिससे घृणा की जाए	घृणित
77	जिसे गुप्त रखा जाए	गोपनीय
78	गणित का ज्ञाता	गणितज्ञ

79	आकाश को चूमने वाला	गगनचुम्बी
80	जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो	खण्डित
818	आकाश में उड़ने वाला	नभचर
82	तेज बुद्धिवाला	कुशाग्रबुद्धि
83	कल्पना से परे हो	कल्पनातीत
84	जो उपकार मानता है	कृतज्ञ
85	किसी की हँसी उड़ाना	उपहास
86	ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त
87	ऊपर लिखा गया	उपरिलिखित
88	जिस पर उपकार किया गया हो	उपकृत
89	इतिहास का ज्ञाता	अतिहासज्ञ
90	आलोचना करने वाला	आलोचक
91	ईश्वर में आस्था रखने वाला	आस्तिक
92	बिना वेतन का	अवैतनिक
93	जो कहा न जा सके	अकथनीय
94	जो गिना न जा सके	अगणित
95	जिसका कोई शत्रु ही न जन्मा हो	अजातशत्रु
96	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
97	जो परिचित न हो	अपरिचित
98	जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम

3. विपरीतार्थक (विलोम शब्द)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अथ	इति	आविर्भाव	तिरोभाव	आकर्षण	विकर्षण

आमिष	निरामिष	अभिज्ञ	अनभिज्ञ	आजादी	गुलामी
अनुकूल	प्रतिकूल	आर्द्र	शुष्क	अनुराग	विराग
आहार	निराहार	अल्प	अधिक	अनिवार्य	वैकल्पिक
अमृत	विष	अगम	सुगम	अभिमान	नम्रता
आकाश	पाताल	आशा	निराशा	अर्थ	अनर्थ
अल्पायु	दीर्घायु	अनुग्रह	विग्रह	अपमान	सम्मान
आश्रित	निराश्रित	अधिकार	प्रकाश	अनुज	अग्रज
अरुचि	रुचि	आदि	अन्त	आदान	प्रदान
आरम्भ	अन्त	आय	व्यय	अर्वाचीन	प्राचीन
अवनति	उन्नति	कटु	मधुर	अवनी	अम्बर
क्रिया	प्रतिक्रिया	कृतज्ञ	कृतघ्न	आदर	अनादर
कड़वा	मीठा	आलोक	अंधकार	क्रुद्ध	शान्त
उदय	अस्त	क्रय	विक्रय	आयात	निर्यात
कर्म	निष्कर्म	अनुपस्थित	उपस्थित	खिलना	मुरझाना
आलस्य	स्फूर्ति	खुशी	दुख, गम	आर्य	अनार्य
गहरा	उथला	अतिवृष्टि	अनावृष्टि	गुरु	लघु
आदि	अनादि	जीवन	मरण	इच्छा	अनिच्छा
गुण	दोष	इष्ट	अनिष्ट	गरीब	अमीर
इच्छित	अनिच्छित	घर	बाहर	इहलोक	परलोक
चर	अचर	उपकार	अपकार	छूत	अछूत
उदार	अनुदार	जल	थल	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
जड़	चेतन	उधार	नकद	जीवन	मरण
उत्थान	पतन	जंगम	स्थावर	उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्तर	दक्षिण	जटिल	सरस	गुप्त	प्रकट

एक	अनेक	तुच्छ	महान	ऐसा	वैसा
दिन	रात	देव	दानव	दुराचारी	सदाचारी
मानवता	दानवता	धर्म	अधर्म	महात्मा	दुरात्मा
धीर	अधीर	मान	अपमान	धूप	छाँव
मित्र	शत्रु	नूतन	पुरातन	मधुर	कटु
नकली	असली	मिथ्या	सत्य	निर्माण	विनाश
मौखिक	लिखित	आस्तिक	नास्तिक	मोक्ष	बन्धन
निकट	दूर	रक्षक	भक्षक	निन्दा	स्तुति
पतिव्रता	कुलटा	राजा	रङ्क	पाप	पुण्य
राग	द्वेष	प्रलय	सृष्टि	रात्रि	दिवस
पवित्र	अपवित्र	लाभ	हानि	विधवा	सधवा
प्रेम	घृणा	विजय	पराजय	प्रश्न	उत्तर
पूर्ण	अपूर्ण	वसन्त	पतझर	परतन्त्र	स्वतन्त्र
विरोध	समर्थन	बाढ़	सूखा	शूर	कायर
बन्धन	मुक्ति	शयन	जागरण	बुराई	भलाई
शीत	उष्ण	भाव	अभाव	स्वर्ग	नरक
मङ्गल	अमङ्गल	सौभाग्य	दुर्भाग्य	स्वीकृत	अस्वीकृत
शुक्ल	कृष्ण	हित	अहित	साक्षर	निरक्षर
स्वदेश	विदेश	हर्ष	शोक	हिंसा	अहिंसा
स्वाधीन	पराधीन	क्षणिक	शाश्वत	साधु	असाधु
ज्ञान	अज्ञान	सुजन	दुर्जन	शुभ	अशुभ
सुपुत्र	कुपुत्र	सुमति	कुमति	सरस	नीरस
सच	झूठ	साकार	निराकार	श्रम	विश्राम
स्तुति	निन्दा	विशुद्ध	दूषित	सजीव	निर्जीव

विषम	सम	सुर	असुर	विद्वान	मूर्ख

4. एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

1. अस्त्र- जो हथियार हाथ से फेंककर चलाया जाए। जैसे-बाण।

शस्त्र- जो हथियार हाथ में पकड़े-पकड़े चलाया जाए। जैसे-कृपाण।

2. अलौकिक- जो इस जगत में कठिनाई से प्राप्त हो। लोकोत्तर।

अस्वाभाविक- जो मानव स्वभाव के विपरीत हो।

असाधारण- सांसारिक होकर भी अधिकता से न मिले। विशेष।

3. अमूल्य- जो चीज मूल्य देकर भी प्राप्त न हो सके।

बहुमूल्य- जिस चीज का बहुत मूल्य देना पड़ा।

4. आनन्द- खुशी का स्थायी और गम्भीर भाव।

आह्लाद- क्षणिक एवं तीव्र आनन्द।

उल्लास- सुख-प्राप्ति की अल्पकालिक क्रिया, उमंग।

प्रसन्नता-साधारण आनन्द का भाव।

5. ईर्ष्या- दूसरे की उन्नति को सहन न कर सकना।

डाह-ईर्ष्यायुक्त जलन।

द्वेष- शत्रुता का भाव।

स्पर्धा- दूसरों की उन्नति देखकर स्वयं उन्नति करने का प्रयास करना।

6. अपराध- सामाजिक एवं सरकारी कानून का उल्लंघन।

पाप- नैतिक एवं धार्मिक नियमों को तोड़ना।

7. अनुनय-किसी बात पर सहमत होने की प्रार्थना।

विनय- अनुशासन एवं शिष्टतापूर्ण निवेदन।

आवेदन-योग्यतानुसार किसी पद के लिए कथन द्वारा प्रस्तुत होना।

प्रार्थना- किसी कार्य-सिद्धि के लिए विनम्रतापूर्ण कथन।

8. आज्ञा-बड़ों का छोटों को कुछ करने के लिए आदेश।

अनुमति-प्रार्थना करने पर बड़ों द्वारा दी गई सहमति।

9. इच्छा- किसी वस्तु को चाहना।

उत्कंठा- प्रतीक्षायुक्त प्राप्ति की तीव्र इच्छा।

आशा-प्राप्ति की सम्भावना के साथ इच्छा का समन्वय।

स्पृहा-उत्कृष्ट इच्छा।

10. सुन्दर- आकर्षक वस्तु।
चारु- पवित्र और सुन्दर वस्तु।
रुचिर-सुरुचि जाग्रत करने वाली सुन्दर वस्तु।
मनोहर- मन को लुभाने वाली वस्तु।
11. मित्र- समवयस्क, जो अपने प्रति प्यार रखता हो।
सखा-साथ रहने वाला समवयस्क।
सगा-आत्मीयता रखने वाला।
सुहृदय-सुन्दर हृदय वाला, जिसका व्यवहार अच्छा हो।
12. अन्तःकरण- मन, चित्त, बुद्धि, और अहङ्कार की समष्टि।
चित्त- स्मृति, विस्मृति, स्वप्न आदि गुणधारी चित्त।
मन- सुख-दुख की अनुभूति करने वाला।
13. महिला- कुलीन घराने की स्त्री।
पत्नी- अपनी विवाहित स्त्री।
स्त्री- नारी जाति की बोधक।
14. नमस्ते- समान अवस्था वालो को अभिवादन।
नमस्कार- समान अवस्था वालों को अभिवादन।
प्रणाम- अपने से बड़ों को अभिवादन।
अभिवादन- सम्माननीय व्यक्ति को हाथ जोड़ना।
15. अनुज- छोटा भाई।
अग्रज- बड़ा भाई।
भाई- छोटे-बड़े दोनों के लिए।
16. स्वागत- किसी के आगमन पर सम्मान।
अभिनन्दन- अपने से बड़ों का विधिवत सम्मान।
17. अहङ्कार- अपने गुणों पर घमण्ड करना।
अभिमान- अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा समझना।
दम्भ- अयोग्य होते हुए भी अभिमान करना।
18. मन्त्रणा- गोपनीय रूप से परामर्श करना।
परामर्श- पूर्णतया किसी विषय पर विचार-विमर्श कर मत प्रकट करना।

5.समोच्चरित शब्द

1. अनल = आग

अनिल = हवा, वायु

2. उपकार = भलाई, भला करना

अपकार = बुराई, बुरा करना

3. अन्न = अनाज

अन्य = दूसरा

4. अणु = कण

अनु = पश्चात

5. ओर = तर

और = तथा

6. असित = काला

अशित = खाया हुआ

7. अपेक्षा = तुलना में

उपेक्षा = निरादर, लापरवाही

8. कल = सुबह, पुरजा

काल = समय

9. अन्दर = भीतर

अन्तर = भेद

10. अङ्क = गोद

अङ्ग = देह का भाग

11. कुल = वंश

कूल = किनारा

12. अश्व = घोड़ा

अश्म = पत्थर

13. अलि = भ्रमर

आली = सखी

14. कृमि = कीट

कृषि = खेती

15. अपचार = अपराध उपचार = इलाज

16. अन्याय = गैर-इंसाफी

अन्यान्य = दूसरे-दूसरे

17. कृति = रचना

कृती = निपुण, परिश्रमी

18. आमरण = मृत्युपर्यंत

आभरण = गहना

19. अवसान = अंत

आसान = सरल

20. कलि = कलियुग, झगड़ा

कली = अधखिला फूल

21. इतर = दूसरा

इत्र = सुगंधित द्रव्य

22. क्रम = सिलसिला कर्म = काम

23. परुष = कठोर

पुरुष = आदमी

24. कुट = घर,किला

कूट = पर्वत

25. कुच = स्तन

कूच = प्रस्थान

26. प्रसाद = कृपा

प्रासादा = महल

27. कुजन = दुर्जन

कूजन = पक्षियों का कलरव

28. गत = बीता हुआ गति = चाल

29. पानी = जल

पाणि = हाथ

30. गुर = उपाय

गुरु = शिक्षक, भारी

31. ग्रह = सूर्य,चंद्र

गृह = घर

32. प्रकार = तरह

प्राकार = किला, घेरा

33. चरण = पैर

चारण = भाट

34. चिर = पुराना

चीर = वस्त्र

35. □ न = साँप का □ न

फ़न = कला

36. छत्र = छाया

क्षत्र = क्षत्रिय, शक्ति

37. □ीठ = दुष्ट, जिद्दी

□ीठ = दृष्टि

38. बदन = देह

वदन = मुख

39. तरणि = सूर्य

तरणी = नौका

40. तरङ्ग = लहर

तुरङ्ग = घोड़ा

41. भवन = घर

भुवन = संसार

42. तप्त = गरम

तृप्त = संतुष्ट

43. दिन = दिवस

दीन = दरिद्र

44. भीति = भय

भित्ति = दीवार

45. दशा = हालत

दिशा = तरफ़

46. द्रव = तरल पदार्थ

अथ द्रव्य = धन

47. भाषण = व्याख्यान

भीषण = भयङ्कर

48. धरा = पृथ्वी

धारा = प्रवाह

49. नय = नीति

नव = नया

50. निर्वाण = मोक्ष

निर्माण = बनाना

51. निर्जर = देवता निर्झर = झरना

52. मत = राय

मति = बुद्धि

53. नेक = अच्छा

नेकु = तनिक

54. पथ = राह

पथ्य = रोगी का आहार

55. मद = मस्ती

मद्य = मदिरा

56. परिणाम = □ ल

परिमाण = वजन

57. मणि = रत्न

□ णी = सर्प

58. मलिन = मैला

म्लान = मुरझाया हुआ

59. मातृ = माता

मात्र = केवल

60. रीति = तरीका

रीता = खाली

61. राज = शासन

राज = रहस्य

62. ललित = सुन्दर

ललिता = गोपी

63. लक्ष्य = उद्देश्य

लक्ष = लाख

64. वक्ष = छाती

वृक्ष = पेड़

65. वसन = वस्त्र

व्यसन = नशा, आदत

66. वासना = कुत्सित

विचार बास = गन्ध

67. वस्तु = चीज

वास्तु = मकान

68. विजन = सुनसान

व्यजन = पंखा

69. शंकर = शिव

सकंर = मिश्रित

70. हिय = हृदय

हय = घोड़ा

71. शर = बाण

सर = तालाब

72. शम = संयम

सम = बराबर

73. चक्रवाक = चकवा

चक्रवात = बवंडर

74. शूर = वीर

सूर = अंधा

75. सुधि = स्मरण

सुधी = बुद्धिमान

76. अभेद = अंतर नहीं

अभेद्य = न टूटने योग्य

77. संघ = समुदाय

संग = साथ

78. सर्ग = अध्याय

स्वर्ग = एक लोक

79. प्रणय = प्रेम

परिणय = विवाह

80. समर्थ = सक्षम

सामर्थ्य = शक्ति

81. कटिबंध = कमरबंध

कटिबद्ध = तैयार

82. क्रांति = विद्रोह

क्लांति = थकावट

83. इन्दिरा = लक्ष्मी

इन्द्रा = इन्द्राणी

6. अनेकार्थक शब्द

1. अक्षर = नष्ट न होने वाला, वर्ण, ईश्वर, शिव।
2. अर्थ = धन, ऐश्वर्य, प्रयोजन, हेतु।
3. आराम = बाग, विश्राम, रोग का दूर होना।
4. कर = हाथ, किरण, टैक्स, हाथी की सूँड़।
5. काल = समय, मृत्यु, यमराज।
6. काम = कार्य, पेशा, धन्धा, वासना, कामदेव।
7. गुण = कौशल, शील, रस्सी, स्वभाव, धनुष की डोरी।
8. घन = बादल, भारी, हथौड़ा, घना।
9. जलज = कमल, मोती, मछली, चन्द्रमा, शङ्ख।
10. तात = पिता, भाई, बड़ा, पूज्य, प्यारा, मित्र।
11. दल = समूह, सेना, पत्ता, हिस्सा, पक्ष, भाग, चिड़ी।
12. नग = पर्वत, वृक्ष, नगीना।
13. पयोधर = बादल, स्तन, पर्वत, गन्ना।
14. फल = लाभ, मेवा, नतीजा, भाले की नोक।
15. बाल = बालक, केश, बाला, दानेयुक्त डंठल।
16. मधु = शहद, मदिरा, चैत मास, एक दैत्य, वसन्त।
17. राग = प्रेम, लाल रङ्ग, सङ्गीत की ध्वनि।
18. राशि = समूह, मेष, कर्क, वृश्चिक आदि राशियाँ।
19. लक्ष्य = निशान, उद्देश्य।
20. वर्ण = अक्षर, रङ्ग, ब्राह्मण आदि जातियाँ।
21. सारङ्ग = मोर, सर्प, मेघ, हिरन, पपीहा, राजहंस, हाथी, कोयल, कामदेव, सिंह, धनुष भौंरा, मधुमक्खी, कमल।
22. सर = अमृत, दूध, पानी, गङ्गा, मधु, पृथ्वी, तालाब।
23. क्षेत्र = देह, खेत, तीर्थ, सदाव्रत बाँटने का स्थान।
24. शिव = भाग्यशाली, महादेव, श्रृगाल, देव, मङ्गल।
25. हरि = हाथी, विष्णु, इन्द्र, पहाड़, सिंह, घोड़ा, सर्प, वानर, मेढक, यमराज, ब्रह्मा, शिव, कोयल, किरण, हंस।

7. पशु-पक्षियों की बोलियाँ

पशु	बोली	पशु	बोली	पशु	बोली
ऊँट	बलबलाना	कोयल	कूकना	गाय	रँभाना
चिड़िया	चहचहाना	भैंस	□कराना (रँभाना)	बकरी	मिमियाना
मोर	कुहकना	घोड़ा	हिनहिनाना	तोता	टैं-टैं करना
हाथी	चिघाड़ना	कौआ	काँव-काँव करना	साँप	□ □ कारना
शेर	दहाड़ना	सारस	क्रें-क्रें करना		
टिटहरी	टी-टी□करना	कुत्ता	भौंकना	मक्खी	भिनभिनाना

8. कुछ जड़ पदार्थों की विशेष ध्वनियाँ या क्रियाएँ

जिह्वा	लपलपाना	दाँत	किटकिटाना
हृदय	धड़कना	पैर	पटकना
अश्रु	छलछलाना	घड़ी	टिक-टिक करना
पक्षी	□ ड़□ ड़ाना	तारे	जगमगाना
नौका	□गमगाना	मेघ	गरजना

9. कुछ सामान्य अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	लिखायी	लिखाई	ससाहिक	सासाहिक	अलोकिक	अलौकिक
सक्षारिक	साक्षारिक	क्यूँ	क्यों	आधीन	अधीन	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप
व्योहार	व्यवहार	बरात	बारात	उपन्यासिक	औपन्यासिक	क्षत्रीय	क्षत्रिय

दुनिया	दुनिया	तिथी	तिथि	कालीदास	कालिदास	पूरती	पूर्ति
अतिथी	अतिथि	नीती	नीति	गृहणी	गृहिणी	परिस्थित	परिस्थिति
आर्शिवाद	आशीर्वाद	निरिक्षण	निरीक्षण	बिमारी	बीमारी	पत्नि	पत्नी
शताब्दि	शताब्दी	लड़ायी	लड़ाई	स्थाई	स्थायी	श्रीमति	श्रीमती
सामिग्री	सामग्री	वापिस	वापस	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	ऊत्थान	उत्थान
दुसरा	दूसरा	साधू	साधु	रेणू	रेणु	नुपुर	नूपुर
अनुदित	अनूदित	जादु	जादू	बृज	ब्रज	प्रथक	पृथक
इतिहासिक	ऐतिहासिक	दाइत्व	दायित्व	सेनिक	सैनिक	सैना	सेना
घबड़ाना	घबराना	श्राप	शाप	बनस्पति	वनस्पति	बन	वन
विना	बिना	बस□	वस□	अमावश्या	अमावस्या	प्रशाद	प्रसाद
ह□सिया	हँसिया	ग□ार	गँवार	असोक	अशोक	निस्वार्थ	निःस्वार्थ
दुस्कर	दुष्कर	मुल्यवान	मूल्यवान	सिरीमान	श्रीमान	महाअन	महान
नवम्	नवम	क्षात्र	छात्र	छमा	क्षमा	आर्दश	आदर्श
षष्टम्	षष्ठ	प्र□ु	पर□ु	प्रीक्षा	परीक्षा	मरयादा	मर्यादा
दुदर्शा	दुर्दशा	कवित्री	कवयित्री	प्रमात्मा	परमात्मा	घनिष्ट	घनिष्ठ
राजभिषेक	राज्याभिषेक	पियास	प्यास	वितीत	व्यतीत	कृप्या	कृपा
व्यक्तिक	वैयक्तिक	मा□िक	मानसिक	समवाद	स□ाद	स□ति	स□त्ति
विषेश	विशेष	शाशन	शासन	दुःख	दुख	मूलतयः	मूलतः
पिओ	पियो	हुये	हुए	लीये	लिए	सहास	साहस
रामायन	रामायण	चरन	चरण	रनभूमि	रणभूमि	रसायण	रसायन
प्रान	प्राण	मरन	मरण	कल्यान	कल्याण	प□ता	पड़ता
ढ़ेर	□र	झा□	झाड़ू	मेंढ़क	मे□क	श्रेष्ट	श्रेष्ठ
षष्टी	षष्ठी	निष्टा	निष्ठा	सृष्ठि	सृष्टि	इष्ठ	इष्ट
स्वास्थ	स्वास्थ्य	पा□	पा□य	स्वत□ा	स्वत□ता	उपलक्ष	उपलक्ष्य

महत्व	महत्त्व	आल्हाद	आह्लाद	उज्वल	उज्जवल	व्यस्क	वयस्क

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=23&booktype=free

अध्याय 23

विराम-चिह्न

विराम-चिह्न- 'विराम' शब्द का अर्थ है 'रुकना'। जब हम अपने भावों को भाषा के द्वारा व्यक्त करते हैं तब एक भाव की अभिव्यक्ति के बाद कुछ देर रुकते हैं, यह रुकना ही विराम कहलाता है।

इस विराम को प्रकट करने हेतु जिन कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, विराम-चिह्न कहलाते हैं। वे इस प्रकार हैं-

1. अल्प विराम (,)- पढ़ते अथवा बोलते समय बहुत थोड़ा रुकने के लिए अल्प विराम-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे-सीता, गीता और लक्ष्मी। यह सुंदर स्थल, जो आप देख रहे हैं, बापू की समाधि है। हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।

2. अर्ध विराम (;)- जहाँ अल्प विराम की अपेक्षा कुछ ज्यादा देर तक रुकना हो वहाँ इस अर्ध-विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे-सूर्योदय हो गया; अंधकार न जाने कहाँ लुप्त हो गया।

3. पूर्ण विराम (।)- जहाँ वाक्य पूर्ण होता है वहाँ पूर्ण विराम-चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे-मोहन पुस्तक पढ़ रहा है। वह □ल तोड़ता है।

4. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)- विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि भावों को दर्शाने वाले शब्द के बाद अथवा कभी-कभी ऐसे वाक्यांश या वाक्य के अंत में भी विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे- हाय ! वह बेचारा मारा गया। वह तो अत्यंत सुशील था ! बड़ा अफ़सोस है !

5. प्रश्नवाचक चिह्न (?)- प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे-किधर चले ? तुम कहाँ रहते हो ?

6. कोष्ठक ()- इसका प्रयोग पद (शब्द) का अर्थ प्रकट करने हेतु, क्रम-बोध और नाटक या एकांकी में अभिनय के भावों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-निरंतर (लगातार) व्यायाम करते रहने से देह (शरीर) स्वस्थ रहता है। विश्व के महान राष्ट्रों में (1) अमेरिका, (2) रूस, (3) चीन, (4) ब्रिटेन आदि हैं।

नल-(खिन्न होकर) ओर मेरे दुर्भाग्य ! तूने दमयन्ती को मेरे साथ बाँधकर उसे भी जीवन-भर कष्ट दिया।

7. निर्देशक चिह्न (-)- इसका प्रयोग विषय-विभाग सम्बन्धी प्रत्येक शीर्षक के आगे, वाक्यों, वाक्यांशों अथवा पदों के मध्य विचार अथवा भाव को विशिष्ट रूप से व्यक्त करने हेतु, उदाहरण अथवा जैसे के बाद, उद्धरण के अन्त में, लेखक के नाम के पूर्व और कथोपकथन में नाम के आगे किया जाता है। जैसे-समस्त जीव-जन्तु-घोड़ा, ऊँट, बैल, कोयल, चिड़िया सभी व्याकुल थे। तुम सो रहे हो- अच्छा, सोओ।

द्वारपाल-भगवन ! एक दुबला-पतला ब्राह्मण द्वार पर खड़ा है।

8. उद्धरण चिह्न (‘‘ ’’)- जब किसी अन्य की उक्ति को बिना किसी परिवर्तन के ज्यों-का-त्यों रखा जाता है, तब वहाँ इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसके पूर्व अल्प विराम-चिह्न लगता है। जैसे-नेताजी ने कहा था, ‘‘तुम हमें खून दो, हम तुम्हें आजादी देंगे।’’, ‘‘ ‘रामचरित मानस’ तुलसी का अमर काव्य ग्रन्थ है।’’

9. आदेश चिह्न (:-)- किसी विषय को क्रम से लिखना हो तो विषय-क्रम व्यक्त करने से पूर्व इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे-सर्वनाम के प्रमुख पाँच भेद हैं :-

(1) पुरुषवाचक, (2) निश्चयवाचक, (3) अनिश्चयवाचक, (4) सम्बन्धवाचक, (5) प्रश्नवाचक।

10. योजक चिह्न (-)- समस्त किए हुए शब्दों में जिस चिह्न का प्रयोग किया जाता है, वह योजक चिह्न कहलाता है। जैसे-माता-पिता, दाल-भात, सुख-दुख, पाप-पुण्य।

11. लाघव चिह्न (.)- किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे शून्य लगा देते हैं। जैसे-पण्डित=प., डॉक्टर=डॉ., प्रोफेसर=प्रो.।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=24&booktype=free

अध्याय 24

वाक्य-प्रकरण

वाक्य- एक विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाला शब्द-समूह वाक्य कहलाता है। जैसे- 1. श्याम दूध पी रहा है। 2. मैं भागते-भागते थक गया। 3. यह कितना सुन्दर उपवन है। 4. ओह ! आज तो गरमी के कारण प्राण निकले जा रहे हैं। 5. वह मेहनत करता तो पास हो जाता।

ये सभी मुख से निकलने वाली सार्थक ध्वनियों के समूह हैं। अतः ये वाक्य हैं। वाक्य भाषा का चरम अवयव है।

वाक्य-ख

वाक्य के प्रमुख दो ख हैं-

1. उद्देश्य।

2. विधेय।

1. उद्देश्य- जिसके विषय में कुछ कहा जाता है उसे सूचकि करने वाले शब्द को उद्देश्य कहते हैं। जैसे-

1. अर्जुन ने जयद्रथ को मारा।

2. कुत्ता भौंक रहा है।

3. तोता ाल पर बैठा है।

इनमें अर्जुन ने, कुत्ता, तोता उद्देश्य हैं; इनके विषय में कुछ कहा गया है। अथवा यों कह सकते हैं कि वाक्य में जो कर्ता हो उसे उद्देश्य कह सकते हैं क्योंकि किसी क्रिया को करने के कारण वही मुख्य होता है।

2. विधेय- उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, अथवा उद्देश्य (कर्ता) जो कुछ कार्य करता है वह सब विधेय कहलाता है। जैसे-

1. अर्जुन ने जयद्रथ को मारा।

2. कुत्ता भौंक रहा है।

3. तोता ाल पर बैठा है।

इनमें 'जयद्रथ को मारा', 'भौंक रहा है', 'ाल पर बैठा है' विधेय हैं क्योंकि अर्जुन ने, कुत्ता, तोता,-इन उद्देश्यों (कर्ताओ) के कार्यों के विषय में क्रमशः मारा, भौंक रहा है, बैठा है, ये विधान किए गए हैं, अतः इन्हें विधेय कहते हैं।

उद्देश्य का विस्तार- कई बार वाक्य में उसका परिचय देने वाले अन्य शब्द भी साथ आए होते हैं। ये अन्य शब्द उद्देश्य का विस्तार कहलाते हैं। जैसे-

1. सुदर पक्षी ाल पर बैठा है।

2. काला साँप पेड़ के नीचे बैठा है।

इनमें सुदर और काला शब्द उद्देश्य का विस्तार हैं।

उद्देश्य में निम्नलिखित शब्द-भेदों का प्रयोग होता है-

(1) सा ा- घोड़ा भागता है।

(2) सर्वनाम- वह जाता है।

(3) विशेषण- विद्वान की सर्वत्र पूजा होती है।

(4) क्रिया-विशेषण- (जिसका) भीतर-बाहर एक-सा हो।

(5) वाक्या श- झूठ बोलना पाप है।

वाक्य के साधारण उद्देश्य में विशेषणादि जोड़कर उसका विस्तार करते हैं। उद्देश्य का विस्तार नीचे लिखे शब्दों के द्वारा प्रकट होता है-
(1) विशेषण से- अच्छा बालक आज्ञा का पालन करता है।
(2) सम्बन्ध कारक से- दर्शकों की भीड़ ने उसे घेर लिया।
(3) वाक्यांश से- काम सीखा हुआ कारीगर कठिनाई से मिलता है।
विधेय का विस्तार- मूल विधेय को पूर्ण करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है वे विधेय का विस्तार कहलाते हैं। जैसे-वह अपने पैन से लिखता है। इसमें अपने विधेय का विस्तार है।
कर्म का विस्तार- इसी तरह कर्म का विस्तार हो सकता है। जैसे-मित्र, अच्छी पुस्तकें पढ़ो। इसमें अच्छी कर्म का विस्तार है।
क्रिया का विस्तार- इसी तरह क्रिया का भी विस्तार हो सकता है। जैसे-श्रेय मन लगाकर पढ़ता है। मन लगाकर क्रिया का विस्तार है।

वाक्य-भेद

रचना के अनुसार वाक्य के निम्नलिखित भेद हैं-
1. साधारण वाक्य।
2. सयुक्त वाक्य।
3. मिश्रित वाक्य।

1. साधारण वाक्य

जिस वाक्य में केवल एक ही उद्देश्य (कर्ता) और एक ही समापिका क्रिया हो, वह साधारण वाक्य कहलाता है। जैसे- 1. बच्चा दूध पीता है। 2. कमल गेंद से खेलता है। 3. मृदुला पुस्तक पढ़ रही हैं।
विशेष-इसमें कर्ता के साथ उसके विस्तारक विशेषण और क्रिया के साथ विस्तारक सहित कर्म एव□क्रिया-विशेषण आ सकते हैं। जैसे-अच्छा बच्चा मीठा दूध अच्छी तरह पीता है। यह भी साधारण वाक्य है।

2. सयुक्त वाक्य

दो अथवा दो से अधिक साधारण वाक्य जब सामानाधिकरण समुच्चयबोधकों जैसे- (पर, किन्तु, और, या आदि) से जुड़े होते हैं, तो वे सयुक्त वाक्य कहलाते हैं। ये चार प्रकार के

होते हैं।
(1) सयोजक- जब एक साधारण वाक्य दूसरे साधारण या मिश्रित वाक्य से सयोजक अव्यय द्वारा जुड़ा होता है। जैसे-गीता गई और सीता आई।
(2) विभाजक- जब साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का परस्पर भेद या विरोध का सबध रहता है। जैसे-वह मेहनत तो बहुत करता है पर ल नही मिलता।
(3) विकल्पसूचक- जब दो बातों में से किसी एक को स्वीकार करना होता है। जैसे- या तो उसे मैं अखाड़े में पछाड़ूँगा या अखाड़े में उतरना ही छोड़ दूँगा।
(4) परिणामबोधक- जब एक साधारण वाक्य दसूरे साधारण या मिश्रित वाक्य का परिणाम होता है। जैसे- आज मुझे बहुत काम है इसलिए मैं तुम्हारे पास नही आ सकूँगा।

3. मिश्रित वाक्य

जब किसी विषय पर पूर्ण विचार प्रकट करने के लिए कई साधारण वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य की रचना करनी पड़ती है तब ऐसे रचित वाक्य ही मिश्रित वाक्य कहलाते हैं।
विशेष- (1) इन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान उपवाक्य और एक अथवा अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं जो समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं।
(2) मुख्य उपवाक्य की पुष्टि, समर्थन, स्पष्टता अथवा विस्तार हेतु ही आश्रित वाक्य आते है।
आश्रित वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-
(1) सज्ञा उपवाक्य।
(2) विशेषण उपवाक्य।
(3) क्रिया-विशेषण उपवाक्य।
1. सज्ञा उपवाक्य- जब आश्रित उपवाक्य किसी सज्ञा अथवा सर्वनाम के स्थान पर आता है तब वह सज्ञा उपवाक्य कहलाता है। जैसे- वह चाहता है कि मैं यहाँ कभी न आऊँ। यहाँ कि मैं कभी न आऊँ, यह सज्ञा उपवाक्य है।
2. विशेषण उपवाक्य- जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की सज्ञा शब्द अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बतलाता है वह विशेषण उपवाक्य कहलाता है। जैसे- जो घड़ी मेज पर रखी है वह मुझे पुरस्कारस्वरूप मिली है। यहाँ जो घड़ी मेज पर रखी है यह विशेषण उपवाक्य है।
3. क्रिया-विशेषण उपवाक्य- जब आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बतलाता है तब वह क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहलाता है। जैसे- जब वह मेरे पास आया तब मैं सो रहा था। यहाँ पर जब वह मेरे पास आया यह क्रिया-विशेषण उपवाक्य है।

वाक्य-परिवर्तन

वाक्य के अर्थ में किसी तरह का परिवर्तन किए बिना उसे एक प्रकार के वाक्य से दूसरे प्रकार के वाक्य में परिवर्तन करना वाक्य-परिवर्तन कहलाता है।

(1) साधारण वाक्यों का सयुक्त वाक्यों में परिवर्तन-

साधारण वाक्य सयुक्त वाक्य

1. मैं दूध पीकर सो गया। मैंने दूध पिया और सो गया।
2. वह पढ़ने के अलावा अखबार भी बेचता है। वह पढ़ता भी है और अखबार भी बेचता है
3. मैंने घर पहुँचकर सब बच्चों को खेलते हुए देखा। मैंने घर पहुँचकर देखा कि सब बच्चे खेल रहे थे।
4. स्वास्थ्य ठीक न होने से मैं काशी नही□जा सका। मेरा स्वास्थ्य ठीक नही□था इसलिए मैं काशी नही□जा सका।
5. सवेरे तेज वर्षा होने के कारण मैं दफ्तर देर से पहुँचा। सवेरे तेज वर्षा हो रही थी इसलिए मैं दफ्तर देर से पहुँचा।

(2) सयुक्त वाक्यों का साधारण वाक्यों में परिवर्तन-

सयुक्त वाक्य साधारण वाक्य

1. पिताजी अस्वस्थ हैं इसलिए मुझे जाना ही पड़ेगा। पिताजी के अस्वस्थ होने के कारण मुझे जाना ही पड़ेगा।
2. उसने कहा और मैं मान गया। उसके कहने से मैं मान गया।
3. वह केवल उपन्यासकार ही नही□अपितु अच्छा वक्ता भी है। वह उपन्यासकार के अतिरिक्त अच्छा वक्ता भी है।
4. लू चल रही थी इसलिए मैं घर से बाहर नही□निकल सका। लू चलने के कारण मैं घर से बाहर नही□निकल सका।
5. गार्ड ने सीटी दी और ट्रेन चल पड़ी। गार्ड के सीटी देने पर ट्रेन चल पड़ी।

(3) साधारण वाक्यों का मिश्रित वाक्यों में परिवर्तन-

साधारण वाक्य मिश्रित वाक्य

1. हरसिंगार को देखते ही मुझे गीता की याद आ जाती है। जब मैं हरसिंगार की ओर देखता हूँ तब मुझे गीता की याद आ जाती है।
2. राष्ट्र के लिए मर मिटने वाला व्यक्ति सच्चा राष्ट्रभक्त है। वह व्यक्ति सच्चा राष्ट्रभक्त है जो राष्ट्र के लिए मर मिटे।
3. पैसे के बिना इंसान कुछ नही□कर सकता। यदि इंसान के पास पैसा नही□है तो वह कुछ नही□कर सकता।

4. आधी रात होते-होते मैंने काम करना बद कर दिया। ज्योंही आधी रात हुई त्योंही मैंने काम करना बद कर दिया।

(4) मिश्रित वाक्यों का साधारण वाक्यों में परिवर्तन-

मिश्रित वाक्य साधारण वाक्य

1. जो सतोषी होते हैं वे सदैव सुखी रहते हैं सतोषी सदैव सुखी रहते हैं।
2. यदि तुम नही पढ़ोगे तो परीक्षा में स ल नही होगे। न पढ़ने की दशा में तुम परीक्षा में स ल नही होगे।
3. तुम नही जानते कि वह कौन है ? तुम उसे नही जानते।
4. जब जेबकतरे ने मुझे देखा तो वह भाग गया। मुझे देखकर जेबकतरा भाग गया।
5. जो विद्वान है, उसका सर्वत्र आदर होता है। विद्वानों का सर्वत्र आदर होता है।

वाक्य-विश्लेषण

वाक्य में आए हुए शब्द अथवा वाक्य-खो को अलग-अलग करके उनका पारस्परिक सबध बताना वाक्य-विश्लेषण कहलाता है।

साधारण वाक्यों का विश्लेषण

1. हमारा राष्ट्र समृद्धशाली है।
2. हमें नियमित रूप से विद्यालय आना चाहिए।
3. अशोक, सोहन का बड़ा पुत्र, पुस्तकालय में अच्छी पुस्तकें छाँट रहा है।

उद्देश्य विधेय

वाक्य उद्देश्य उद्देश्य का क्रिया कर्म कर्म का पूरक विधेय क्रमाक कर्ता विस्तार विस्तार का विस्तार

1. राष्ट्र हमारा है - - समृद्ध -
2. हमें - आना विद्यालय - शाली नियमित

चाहिए रूप से

3. अशोक सोहन का छाँट रहा पुस्तकें अच्छी पुस्तकालय

बड़ा पुत्र है में

मिश्रित वाक्य का विश्लेषण-

1. जो व्यक्ति जैसा होता है वह दूसरों को भी वैसा ही समझता है।
2. जब-जब धर्म की क्षति होती है तब-तब ईश्वर का अवतार होता है।
3. मालूम होता है कि आज वर्षा होगी।
4. जो सतोषी होत हैं वे सदैव सुखी रहते हैं।

5. दार्शनिक कहते हैं कि जीवन पानी का बुलबुला है।

सयुक्त वाक्य का विश्लेषण-

1. तेज वर्षा हो रही थी इसलिए परसों मैं तुम्हारे घर नही आ सका।
2. मैं तुम्हारी राह देखता रहा पर तुम नही आए।
3. अपनी प्रगति करो और दूसरों का हित भी करो तथा स्वार्थ में न हिचको।

अर्थ के अनुसार वाक्य के प्रकार

अर्थानुसार वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं-

1. विधानार्थक वाक्य।
2. निषेधार्थक वाक्य।
3. आज्ञार्थक वाक्य।
4. प्रश्नार्थक वाक्य।
5. इच्छार्थक वाक्य।
6. सदेहार्थक वाक्य।
7. सकेतार्थक वाक्य।
8. विस्मयबोधक वाक्य।

1. विधानार्थक वाक्य-जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने का सामान्य कथन हो। जैसे-मैं कल दिल्ली जाऊँगा। पृथ्वी गोल है।

2. निषेधार्थक वाक्य- जिस वाक्य से किसी बात के न होने का बोध हो। जैसे-मैं किसी से लड़ाई मोल नही लेना चाहता।

3. आज्ञार्थक वाक्य- जिस वाक्य से आज्ञा उपदेश अथवा आदेश देने का बोध हो। जैसे-शीघ्र जाओ वरना गाड़ी छूट जाएगी। आप जा सकते हैं।

4. प्रश्नार्थक वाक्य- जिस वाक्य में प्रश्न किया जाए। जैसे-वह कौन हैं उसका नाम क्या है।

5. इच्छार्थक वाक्य- जिस वाक्य से इच्छा या आशा के भाव का बोध हो। जैसे-दीर्घायु हो। धनवान हो।

6. सदेहार्थक वाक्य- जिस वाक्य से सदेह का बोध हो। जैसे-शायद आज वर्षा हो। अब तक पिताजी जा चुके होंगे।

7. सकेतार्थक वाक्य- जिस वाक्य से सकेत का बोध हो। जैसे-यदि तुम कन्याकुमारी चलो तो मैं भी चलूँ।

8. विस्मयबोधक वाक्य-जिस वाक्य से विस्मय के भाव प्रकट हों। जैसे-अहा ! कैसा सुहावना मौसम है।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=25&booktype=free

अध्याय 25

अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध वाक्य

(1) वचन-सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध शुद्ध

1. पाकिस्तान ने गोले और तोपों से आक्रमण किया। पाकिस्तान ने गोलों और तोपों से आक्रमण किया।
2. उसने अनेकों ग्रन्थ लिखे। उसने अनेक ग्रन्थ लिखे।
3. महाभारत अठारह दिनों तक चलता रहा। महाभारत अठारह दिन तक चलता रहा।
4. तेरी बात सुनते-सुनते कान पक गए। तेरी बातें सुनते-सुनते कान पक गए।
5. पेड़ों पर तोता बैठा है। पेड़ पर तोता बैठा है।

(2) लिङ्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध शुद्ध

1. उसने सन्तोष का साँस ली। उसने सन्तोष की साँस ली।
2. सविता ने जोर से हँस दिया। सविता जोर से हँस दी।
3. मुझे बहुत आनन्द आती है। मुझे बहुत आनन्द आता है।
4. वह धीमी स्वर में बोला। वह धीमे स्वर में बोला।
5. राम और सीता वन को गई। राम और सीता वन को गए।

(3) विभक्ति-सम्बन्धी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध शुद्ध

1. मैं यह काम नहीं किया हूँ। मैंने यह काम नहीं किया है।
2. मैं पुस्तक को पढ़ता हूँ। मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
3. हमने इस विषय को विचार किया। हमने इस विषय पर विचार किया
4. आठ बजने को दस मिनट है। आठ बजने में दस मिनट है।
5. वह देर में सोकर उठता है। वह देर से सोकर उठता है।

(4) सङ्ख्या सम्बन्धी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध शुद्ध

1. मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा। मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊँगा।

2. कुत्ता रेंकता है। कुत्ता भौंकता है।
3. मुझे स□ ल होने की निराशा है। मुझे स□ ल होने की आशा नही□है।
4. गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ गई। पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ गई।

(5) सर्वनाम की अशुद्धियाँ-

अशुद्ध शुद्ध

1. गीता आई और कहा। गीता आई और उसने कहा।
2. मैंने तेरे को कितना समझाया। मैंने तुझे कितना समझाया।
3. वह क्या जाने कि मैं कैसे जीवित हूँ। वह क्या जाने कि मैं कैसे जी रहा हूँ।

(6) विशेषण-सम्बन्धी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध शुद्ध

1. किसी और लड़के को बुलाओ। किसी दूसरे लड़के को बुलाओ।
2. सिंह बड़ा बीभत्स होता है। सिंह बड़ा भयानक होता है।
3. उसे भारी दुख हुआ। उसे बहुत दुख हुआ।
4. सब लोग अपना काम करो। सब लोग अपना-अपना काम करो।

(7) क्रिया-सम्बन्धी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध शुद्ध

1. क्या यह सम्भव हो सकता है ? क्या यह सम्भव है ?
2. मैं दर्शन देने आया था। मैं दर्शन करने आया था।
3. वह पढ़ना माँगता है। वह पढ़ना चाहता है।
4. बस तुम इतने रूठ उठे बस, तुम इतने में रूठ गए।
5. तुम क्या काम करता है ? तुम क्या काम करते हो ?

(8) मुहावरे-सम्बन्धी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध शुद्ध

1. युग की माँग का यह बीड़ा कौन चबाता है युग की माँग का यह बीड़ा कौन उठाता है।
2. वह श्याम पर बरस गया। वह श्याम पर बरस पड़ा।
3. उसकी अक्ल चक्कर खा गई। उसकी अक्ल चकरा गई।
4. उस पर घड़ों पानी गिर गया। उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

(9) क्रिया-विशेषण-सम्बन्धी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध शुद्ध

1. वह लगभग दौड़ रहा था। वह दौड़ रहा था।
2. सारी रात भर मैं जागता रहा। मैं सारी रात जागता रहा।

3. तुम बड़ा आगे बढ़ गया। तुम बहुत आगे बढ़ गए.
4. इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वस्व शान्ति है। इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वत्र शान्ति है।

http://pustak.org/bs/home.php?bookid=4883&act=continue&index=26&booktype=free

अध्याय 26

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरा- कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे उसे मुहावरा कहते हैं।
लोकोक्ति- लोकोक्तियाँ लोक-अनुभव से बनती हैं। किसी समाज ने जो कुछ अपने लम्बे अनुभव से सीखा है उसे एक वाक्य में बाँध दिया है। ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं। इसे कहावत, जनश्रुति आदि भी कहते हैं।
मुहावरा और लोकोक्ति में अन्तर- मुहावरा वाक्यांश है और इसका स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकोक्ति सम्पूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से किया जा सकता है। जैसे-'होश उड़ जाना' मुहावरा है। 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी' लोकोक्ति है।
कुछ प्रचलित मुहावरे

1. अंग सम्बन्धी मुहावरे

1. अंग छूटा- (कसम खाना) मैं अंग छूकर कहता हूँ साहब, मैने पाजेब नहीं देखी।
2. अंग-अंग मुसकाना-(बहुत प्रसन्न होना)- आज उसका अंग-अंग मुसकरा रहा था।
3. अंग-अंग टूटना-(सारे बदन में दर्द होना)-इस ज्वर ने तो मेरा अंग-अंग तोड़कर रख दिया।
4. अंग-अंग ढीला होना-(बहुत थक जाना)- तुम्हारे साथ कल चलूँगा। आज तो मेरा अंग-अंग ढीला हो रहा है।

2. अक्ल-सम्बन्धी मुहावरे

1. अक्ल का दुश्मन-(मूर्ख)- वह तो निरा अक्ल का दुश्मन निकला।
2. अक्ल चकराना-(कुछ समझ में न आना)-प्रश्न-पत्र देखते ही मेरी अक्ल चकरा गई।
3. अक्ल के पीछे लठ लिए फिरना (समझाने पर भी न मानना)- तुम तो सदैव अक्ल के

पीछे लठ लिए िरते हो।
4. अक्ल के घोड़े दौड़ाना-(तरह-तरह के विचार करना)- बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने अक्ल के घोड़े दौड़ाए, तब कहीवे अणुबम बना सके।

3. आँख-सबधी मुहावरे

1. आँख दिखाना-(गुस्से से देखना)- जो हमें आँख दिखाएगा, हम उसकी आँखें ोड़ देगें।
2. आँखों में गिरना-(सम्मानरहित होना)- कुरसी की होड़ ने जनता सरकार को जनता की आँखों में गिरा दिया।
3. आँखों में धूल झोंकना-(धोखा देना)- शिवाजी मुगल पहरेदारों की आँखों में धूल झोंककर बदीगृह से बाहर निकल गए।
4. आँख चुराना-(छिपना)- आजकल वह मुझसे आँखें चुराता िरता है।
5. आँख मारना-(इशारा करना)-गवाह मेरे भाई का मित्र निकला, उसने उसे आँख मारी, अन्यथा वह मेरे विरुद्ध गवाही दे देता।
6. आँख तरसना-(देखने के लालायित होना)- तुम्हें देखने के लिए तो मेरी आँखें तरस गई।
7. आँख र लेना-(प्रतिकूल होना)- उसने आजकल मेरी ओर से आँखें र ली हैं।
8. आँख बिछाना-(प्रतीक्षा करना)- लोकनायक जयप्रकाश नारायण जिधर जाते थे उधर ही जनता उनके लिए आँखें बिछाए खड़ी होती थी।
9. आँखें सेंकना-(सुदर वस्तु को देखते रहना)- आँख सेंकते रहोगे या कुछ करोगे भी
10. आँखें चार होना-(प्रेम होना,आमना-सामना होना)- आँखें चार होते ही वह खिड़की पर से हट गई।
11. आँखों का तारा-(अतिप्रिय)-आशीष अपनी माँ की आँखों का तारा है।
12. आँख उठाना-(देखने का साहस करना)- अब वह कभी भी मेरे सामने आँख नहीठा सकेगा।
13. आँख खुलना-(होश आना)- जब सबधियों ने उसकी सारी सपत्ति हड़प ली तब उसकी आँखें खुली।
14. आँख लगना-(नीद आना अथवा व्यार होना)- बड़ी मुश्किल से अब उसकी आँख लगी है। आजकल आँख लगते देर नहीहोती।
15. आँखों पर परदा पड़ना-(लोभ के कारण सचाई न दीखना)- जो दूसरों को ठगा करते हैं, उनकी आँखों पर परदा पड़ा हुआ है। इसका ल उन्हें अवश्य मिलेगा।
16. आँखों का काटा-(अप्रिय व्यक्ति)- अपनी कुप्रवृत्तियों के कारण राजन पिताजी की आँखों

का काँटा बन गया।
17. आँखों में समाना-(दिल में बस जाना)- गिरधर मीरा की आँखों में समा गया।

4. कलेजा-सम्बन्धी कुछ मुहावरे

1. कलेजे पर हाथ रखना-(अपने दिल से पूछना)- अपने कलेजे पर हाथ रखकर कहो कि क्या तुमने पैन नही□तोड़ा।
2. कलेजा जलना-(तीव्र असन्तोष होना)- उसकी बातें सुनकर मेरा कलेजा जल उठा।
3. कलेजा ठ□□ा होना-(सन्तोष हो जाना)- □ाकुओ□को पकड़ा हुआ देखकर गाँव वालों का कलेजा ठ□□ा हो गया।
4. कलेजा थामना-(जी कड़ा करना)- अपने एकमात्र युवा पुत्र की मृत्यु पर माता-पिता कलेजा थामकर रह गए।
5. कलेजे पर पत्थर रखना-(दुख में भी धीरज रखना)- उस बेचारे की क्या कहते हों, उसने तो कलेजे पर पत्थर रख लिया है।
6. कलेजे पर साँप लोटना-(ईर्ष्या से जलना)- श्रीराम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर दासी मन्थरा के कलेजे पर साँप लोटने लगा।

5. कान-सम्बन्धी कुछ मुहावरे

1. कान भरना-(चुगली करना)- अपने साथियों के विरुद्ध अध्यापक के कान भरने वाले विद्यार्थी अच्छे नही□होते।
2. कान कतरना-(बहुत चतुर होना)- वह तो अभी से बड़े-बड़ों के कान कतरता है।
3. कान का कच्चा-(सुनते ही किसी बात पर विश्वास करना)- जो मालिक कान के कच्चे होते हैं वे भले कर्मचारियों पर भी विश्वास नही□करते।
4. कान पर जूँ तक न रेंगना-(कुछ असर न होना)-माँ ने गौरव को बहुत समझाया, किन्तु उसके कान पर जूँ तक नही□रेंगी।
5. कानोंकान खबर न होना-(बिलकुल पता न चलना)-सोने के ये बिस्कुट ले जाओ, किसी को कानोंकान खबर न हो।

6. नाक-सम्बन्धी कुछ मुहावरे

1. नाक में दम करना-(बहुत तङ्ग करना)- आतङ्कवादियों ने सरकार की नाक में दम कर रखा है।

2. नाक रखना-(मान रखना)- सच पूछो तो उसने सच कहकर मेरी नाक रख ली।
3. नाक रगड़ना-(दीनता दिखाना)-गिरहकट ने सिपाही के सामने खूब नाक रगड़ी, पर उसने उसे छोड़ा नही।
4. नाक पर मक्खी न बैठने देना-(अपने पर आँच न आने देना)-कितनी ही मुसीबतें उठाई, पर उसने नाक पर मक्खी न बैठने दी।
5. नाक कटना-(प्रतिष्ठा नष्ट होना)- अरे भैया आजकल की औलाद तो खानदान की नाक काटकर रख देती है।

7. मुँह-सम्बन्धी कुछ मुहावरे

1. मुँह की खाना-(हार मानना)-पड़ोसी के घर के मामले में दखल देकर हरद्वारी को मुँह की खानी पड़ी।
2. मुँह में पानी भर आना-(दिल ललचाना)- लड्डुओं का नाम सुनते ही पंडितजी के मुँह में पानी भर आया।
3. मुँह खून लगना-(रिश्वत लेने की आदत पड़ जाना)- उसके मुँह खून लगा है, बिना लिए वह काम नही करेगा।
4. मुँह छिपाना-(लज्जित होना)- मुँह छिपाने से काम नही बनेगा, कुछ करके भी दिखाओ।
5. मुँह रखना-(मान रखना)-मैं तुम्हारा मुँह रखने के लिए ही प्रमोद के पास गया था, अन्यथा मुझे क्या आवश्यकता थी।
6. मुँहतोड़ जवाब देना-(कड़ा उत्तर देना)- श्याम मुँहतोड़ जवाब सुनकर फिर कुछ नही बोला।
7. मुँह पर कालिख पोतना-(कलंक लगाना)-बेटा तुम्हारे कुकर्मों ने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी है।
8. मुँह उतरना-(उदास होना)-आज तुम्हारा मुँह क्यों उतरा हुआ है।
9. मुँह ताकना-(दूसरे पर आश्रित होना)-अब गेहूँ के लिए हमें अमेरिका का मुँह नही ताकना पड़ेगा।
10. मुँह बंद करना-(चुप कर देना)-आजकल रिश्वत ने बड़े-बड़े अफसरों का मुँह बंद कर रखा है।

8. दाँत-सम्बन्धी मुहावरे

1. दाँत पीसना-(बहुत ज्यादा गुस्सा करना)- भला मुझ पर दाँत क्यों पीसते हो? शीशा तो शंकर ने तोड़ा है।

2. दाँत खट्टे करना-(बुरी तरह हराना)- भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।
3. दाँत काटी रोटी-(घनिष्ठता, पक्की मित्रता)- कभी राम और श्याम में दाँत काटी रोटी थी पर आज एक-दूसरे के जानी दुश्मन है।

9. गरदन-सम्बन्धी मुहावरे

1. गरदन झुकाना-(लज्जित होना)- मेरा सामना होते ही उसकी गरदन झुक गई।
2. गरदन पर सवार होना-(पीछे पड़ना)- मेरी गरदन पर सवार होने से तुम्हारा काम नही बनने वाला है।
3. गरदन पर छुरी े रना-(अत्याचार करना)-उस बेचारे की गरदन पर छुरी े रते तुम्हें शरम नही आती, भगवान इसके लिए तुम्हें कभी क्षमा नही करेंगे।

10. गले-सम्बन्धी मुहावरे

1. गला घोंटना-(अत्याचार करना)- जो सरकार गरीबों का गला घोंटती है वह देर तक नही टिक सकती।
2. गला ँसाना-(बन्धन में पड़ना)- दूसरों के मामले में गला ँसाने से कुछ हाथ नही आएगा।
3. गले मढ़ना-(जबरदस्ती किसी को कोई काम सौंपना)- इस बुद्धू को मेरे गले मढ़कर लालाजी ने तो मुझे तंग कर ाला है।
4. गले का हार-(बहुत प्यारा)- तुम तो उसके गले का हार हो, भला वह तुम्हारे काम को क्यों मना करने लगा।

11. सिर-सम्बन्धी मुहावरे

1. सिर पर भूत सवार होना-(धुन लगाना)-तुम्हारे सिर पर तो हर समय भूत सवार रहता है।
2. सिर पर मौत खेलना-(मृत्यु समीप होना)- विभीषण ने रावण को सम्बोधित करते हुए कहा, 'भैया ! मुझे क्या रा रहे हो ? तुम्हारे सिर पर तो मौत खेल रही है'।
3. सिर पर खून सवार होना-(मरने-मारने को तैयार होना)- अरे, बदमाश की क्या बात करते हो ? उसके सिर पर तो हर समय खून सवार रहता है।
4. सिर-धड़ की बाजी लगाना-(प्राणों की भी परवाह न करना)- भारतीय वीर देश की रक्षा

के लिए सिर-धड़ की बाजी लगा देते हैं।
5. सिर नीचा करना-(लजा जाना)-मुझे देखते ही उसने सिर नीचा कर लिया।

12. हाथ-सम्बन्धी मुहावरे

1. हाथ खाली होना-(रुपया-पैसा न होना)- जुआ खेलने के कारण राजा नल का हाथ खाली हो गया था।
2. हाथ खींचना-(साथ न देना)-मुसीबत के समय नकली मित्र हाथ खींच लेते हैं।
3. हाथ पे हाथ धरकर बैठना-(निकम्मा होना)- उद्यमी कभी भी हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठते हैं, वे तो कुछ करके ही दिखाते हैं।
4. हाथों के तोते उड़ना-(दुख से हैरान होना)- भाई के निधन का समाचार पाते ही उसके हाथों के तोते उड़ गए।
5. हाथोंहाथ-(बहुत जल्दी)-यह काम हाथोंहाथ हो जाना चाहिए।
6. हाथ मलते रह जाना-(पछताना)- जो बिना सोचे-समझे काम शुरू करते है वे अन्त में हाथ मलते रह जाते हैं।
7. हाथ साफ करना-(चुरा लेना)- ओह ! किसी ने मेरी जेब पर हाथ साफ कर दिया।
8. हाथ-पाँव मारना-(प्रयास करना)- हाथ-पाँव मारने वाला व्यक्ति अन्त में अवश्य सफलता प्राप्त करता है।
9. हाथ टालना-(शुरू करना)- किसी भी काम में हाथ टालने से पूर्व उसके अच्छे या बुरे फल पर विचार कर लेना चाहिए।

13. हवा-सम्बन्धी मुहावरे

1. हवा लगना-(असर पड़ना)-आजकल भारतीयों को भी पश्चिम की हवा लग चुकी है।
2. हवा से बातें करना-(बहुत तेज दौड़ना)- राणा प्रताप ने ज्यों ही लगाम हिलाई, चेतक हवा से बातें करने लगा।
3. हवाई किले बनाना-(झूठी कल्पनाएँ करना)- हवाई किले ही बनाते रहोगे या कुछ करोगे भी ?
4. हवा हो जाना-(गायब हो जाना)- देखते-ही-देखते मेरी साइकिल न जाने कहाँ हवा हो गई ?

14. पानी-सम्बन्धी मुहावरे

1. पानी-पानी होना-(लज्जित होना)-ज्योंही सोहन ने माताजी के पर्स में हाथ □ाला कि ऊपर से माताजी आ गई। बस, उन्हें देखते ही वह पानी-पानी हो गया।
2. पानी में आग लगाना-(शान्ति भङ्ग कर देना)-तुमने तो सदा पानी में आग लगाने का ही काम किया है।
3. पानी □ र देना-(निराश कर देना)-उसने तो मेरी आशाओ□पर पानी पेर दिया।
4. पानी भरना-(तुच्छ लगना)-तुमने तो जीवन-भर पानी ही भरा है।

15. कुछ मिले-जुले मुहावरे

1. अँगूठा दिखाना-(देने से सा□ इनकार कर देना)-सेठ रामलाल ने धर्मशाला के लिए पाँच हजार रुपए दान देने को कहा था, किन्तु जब मैनेजर उनसे माङ्गने गया तो उन्होंने अँगूठा दिखा दिया।
2. अगर-मगर करना-(टालमटोल करना)-अगर-मगर करने से अब काम चलने वाला नही□ है। बन्धु !
3. अङ्गारे बरसाना-(अत्यन्त गुस्से से देखना)-अभिमन्यु वध की सूचना पाते ही अर्जुन के नेत्र अङ्गारे बरसाने लगे।
4. आड़े हाथों लेना-(अच्छी तरह काबू करना)-श्रीकृष्ण ने कंस को आड़े हाथों लिया।
5. आकाश से बातें करना-(बहुत ऊँचा होना)-टी.वी.टावर तो आकाश से बाते करती है।
6. ईद का चाँद-(बहुत कम दीखना)-मित्र आजकल तो तुम ईद का चाँद हो गए हो, कहाँ रहते हो ?
7. उँगली पर नचाना-(वश में करना)-आजकल की औरतें अपने पतियों को उँगलियों पर नचाती हैं।
8. कलई खुलना-(रहस्य प्रकट हो जाना)-उसने तो तुम्हारी कलई खोलकर रख दी।
9. काम तमाम करना-(मार देना)- रानी लक्ष्मीबाई ने पीछा करने वाले दोनों अङ्गरेजों का काम तमाम कर दिया।
10. कुत्ते की मौत करना-(बुरी तरह से मरना)-राष्ट्रद्रोही सदा कुत्ते की मौत मरते हैं।
11. कोल्हू का बैल-(निरन्तर काम में लगे रहना)-कोल्हू का बैल बनकर भी लोग आज भरपेट भोजन नही□पा सकते।
12. खाक छानना-(दर-दर भटकना)-खाक छानने से तो अच्छा है एक जगह जमकर काम करो।
13. गड़े मुरदे उखाड़ना-(पिछली बातों को याद करना)-गड़े मुरदे उखाड़ने से तो अच्छा है कि अब हम चुप हो जाएँ।

14. गुलछर्रे उड़ाना-(मौज करना)-आजकल तुम तो दूसरे के माल पर गुलछर्रे उड़ा रहे हो।
15. घास खोदना-(□ जूल समय बिताना)-सारी उम्र तुमने घास ही खोदी है।
16. चम्पत होना-(भाग जाना)-चोर पुलिस को देखते ही चम्पत हो गए।
17. चौकड़ी भरना-(छलाँगे लगाना)-हिरन चौकड़ी भरते हुए कही□से कही□जा पहुँचे।
18. छक्के छु□ाना-(बुरी तरह पराजित करना)-पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी के छक्के छुड़ा दिए।
19. टका-सा जवाब देना-(कोरा उत्तर देना)-आशा थी कि कही□वह मेरी जीविका का प्रबन्ध कर देगा, पर उसने तो देखते ही टका-सा जवाब दे दिया।
20. टोपी उछालना-(अपमानित करना)-मेरी टोपी उछालने से उसे क्या मिलेगा?
21. तलवे चाटने-(खुशामद करना)-तलवे चाटकर नौकरी करने से तो कही□□ूब मरना अच्छा है।
22. थाली का बैंगन-(अस्थिर विचार वाला)- जो लोग थाली के बैगन होते हैं, वे किसी के सच्चे मित्र नही□होते।
23. दाने-दाने को तरसना-(अत्यन्त गरीब होना)-बचपन में मैं दाने-दाने को तरसता □ा, आज ईश्वर की कृपा है।
24. दौड़-धूप करना-(कठोर श्रम करना)-आज के युग में दौड़-धूप करने से ही कुछ काम बन पाता है।
25. धज्जियाँ उड़ाना-(नष्ट-भ्रष्ट करना)-यदि कोई भी राष्ट्र हमारी स्वतन्त्रता को हड़पना चाहेगा तो हम उसकी धज्जियाँ उड़ा देंगे।
26. नमक-मिर्च लगाना-(बढ़ा-चढ़ाकर कहना)-आजकल समाचारपत्र किसी भी बात को इस प्रकार नमक-मिर्च लगाकर लिखते हैं कि जनसाधारण उस पर विश्वास करने लग जाता है।
27. नौ-दो ग्यारह होना-(भाग जाना)- बिल्ली को देखते ही चूहे नौ-दो ग्यारह हो गए। 28. □ूँक-□ूँककर कदम रखना-(सोच-समझकर कदम बढ़ाना)-जवानी में □ूँक-□ूँककर कदम रखना चाहिए।
29. बाल-बाल बचना-(बड़ी कठिनाई से बचना)-गाड़ी की टक्कर होने पर मेरा मित्र बाल-बाल बच गया।
30. भाड़ झोंकना-(योंही समय बिताना)-दिल्ली में आकर भी तुमने तीस साल तक भाड़ ही झोंका है।
31. मक्खियाँ मारना-(निकम्मे रहकर समय बिताना)-यह समय मक्खियाँ मारने का नही□ है, घर का कुछ काम-काज ही कर लो।
32. माथा ठनकना-(सन्देह होना)- सिंह के पञ्जों के निशान रेत पर देखते ही गीदड़ का माथा ठनक गया।

33. मिट्टी खराब करना-(बुरा हाल करना)-आजकल के नौजवानों ने बूढ़ों की मिट्टी खराब कर रखी है।

34. रंग उड़ाना-(घबरा जाना)-काले नाग को देखते ही मेरा रंग उड़ गया।

35. रफू चक्कर होना-(भाग जाना)-पुलिस को देखते ही बदमाश रफू चक्कर हो गए।

36. लोहे के चने चबाना-(बहुत कठिनाई से सामना करना)- मुगल सम्राट अकबर को राणाप्रताप के साथ टक्कर लेते समय लोहे के चने चबाने पड़े।

37. विष उगलना-(बुरा-भला कहना)-दुर्योधन को गाण्डीव धनुष का अपमान करते देख अर्जुन विष उगलने लगा।

38. श्रीगणेश करना-(शुरू करना)-आज बृहस्पतिवार है, नए वर्ष की पढ़ाई का श्रीगणेश कर लो।

39. हजामत बनाना-(ठगना)-ये हिप्पी न जाने कितने भारतीयों की हजामत बना चुके हैं।

40. शैतान के कान कतरना-(बहुत चालाक होना)-तुम तो शैतान के भी कान कतरने वाले हो, बेचारे रामनाथ की तुम्हारे सामने बिसात ही क्या है ?

41. राई का पहाड़ बनाना-(छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा देना)- तनिक-सी बात के लिए तुमने राई का पहाड़ बना दिया।

कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ

1. अधजल गगरी छलकत जाए-(कम गुण वाला व्यक्ति दिखावा बहुत करता है)- श्याम बातें तो ऐसी करता है जैसे हर विषय में मास्टर हो, वास्तव में उसे किसी विषय का भी पूरा ज्ञान नहीं। अधजल गगरी छलकत जाए।

2. अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत-(समय निकल जाने पर पछताने से क्या लाभ)- सारा साल तुमने पुस्तकें खोलकर नहीं देखीं। अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।

3. आम के आम गुठलियों के दाम-(दुगुना लाभ)- हिन्दी पढ़ने से एक तो आप नई भाषा सीखकर नौकरी पर पदोन्नति कर सकते हैं, दूसरे हिन्दी के उच्च साहित्य का रसास्वादन कर सकते हैं, इसे कहते हैं-आम के आम गुठलियों के दाम।

4. ऊँची दुकान फीका पकवान-(केवल ऊपरी दिखावा करना)- कनॉटप्लेस के अनेक स्टोर बड़े प्रसिद्ध है, पर सब घटिया दर्जे का माल बेचते हैं। सच है, ऊँची दुकान फीका पकवान।

5. घर का भेदी लंका ढाए-(आपसी फूट के कारण भेद खोलना)-कई व्यक्ति पहले कांग्रेस में थे, अब जनता (एस) पार्टी में मिलकर कांग्रेस की बुराई करते हैं। सच है, घर का भेदी लंका ढाए।

6. जिसकी लाठी उसकी भैंस-(शक्तिशाली की विजय होती है)- अंग्रेजों ने सेना के बल पर बंगाल पर अधिकार कर लिया था-जिसकी लाठी उसकी भैंस।

7. जल में रहकर मगर से वैर-(किसी के आश्रय में रहकर उससे शत्रुता मोल लेना)- जो भारत में रहकर विदेशों का गुणगान करते हैं, उनके लिए वही कहावत है कि जल में रहकर मगर से वैर।

8. थोथा चना बाजे घना-(जिसमें सत नही□होता वह दिखावा करता है)- गजेंद्र ने अभी दसवी□की परीक्षा पास की है, और आलोचना अपने बड़े-बड़े गुरुजनों की करता है। थोथा चना बाजे घना।

9. दूध का दूध पानी का पानी-(सच और झूठ का ठीक □ैसला)- सरपंच ने दूध का दूध,पानी का पानी कर दिखाया, असली दोषी मंगू को ही द□ मिला।

10. दूर के □ोल सुहावने-(जो चीजें दूर से अच्छी लगती हों)- उनके मसूरी वाले बंगले की बहुत प्रशंसा सुनते थे किन्तु वहाँ दुर्गंध के मारे तंग आकर हमारे मुख से निकल ही गया-दूर के □ोल सुहावने।

11. न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी-(कारण के नष्ट होने पर कार्य न होना)- सारा दिन लड़के आमों के लिए पत्थर मारते रहते थे। हमने आँगन में से आम का वृक्ष की कटवा दिया। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

12. नाच न जाने आँगन टेढ़ा-(काम करना नही□आना और बहाने बनाना)-जब रवीन्द्र ने कहा कि कोई गीत सुनाइए, तो सुनील बोला, 'आज समय नही□है'। □र किसी दिन कहा तो कहने लगा, 'आज मू□ नही□है'। सच है, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

13. बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख-(माँगे बिना अच्छी वस्तु की प्राप्ति हो जाती है, माँगने पर साधारण भी नही□मिलती)- अध्यापकों ने माँगों के लिए हड़ताल कर दी, पर उन्हें क्या मिला ? इनसे तो बैंक कर्मचारी अच्छे रहे, उनका भत्ता बढ़ा दिया गया। बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।

14. मान न मान मैं तेरा मेहमान-(जबरदस्ती किसी का मेहमान बनना)-एक अमेरिकन कहने लगा, मैं एक मास आपके पास रहकर आपके रहन-सहन का अध्ययन करूँगा। मैंने मन में कहा, अजब आदमी है, मान न मान मैं तेरा मेहमान।

15. मन चंगा तो कठौती में गंगा-(यदि मन पवित्र है तो घर ही तीर्थ है)-भैया रामेश्वरम जाकर क्या करोगे ? घर पर ही ईशस्तुति करो। मन चंगा तो कठौती में गंगा।

16. दोनों हाथों में लड्□ू-(दोनों ओर लाभ)- महेंद्र को इधर उच्च पद मिल रहा था और उधर अमेरिका से वजी□ा। उसके तो दोनों हाथों में लड्□ू थे।

17. नया नौ दिन पुराना सौ दिन-(नई वस्तुओ□का विश्वास नही□होता, पुरानी वस्तु टिकाऊ होती है)- अब भारतीय जनता का यह विश्वास है कि इस सरकार से तो पहली सरकार

ि र भी अच्छी थी। नया नौ दिन, पुराना नौ दिन।

18. बगल में छुरी मुँह में राम-राम-(भीतर से शत्रुता और ऊपर से मीठी बातें)- साम्राज्यवादी आज भी कुछ राष्ट्रों को उन्नति की आशा दिलाकर उन्हें अपने अधीन रखना चाहते हैं, परन्तु अब सभी देश समझ गए हैं कि उनकी बगल में छुरी और मुँह में राम-राम है।

19. लातों के भूत बातों से नही मानते-(शरारती समझाने से वश में नही आते)- सलीम बड़ा शरारती है, पर उसके अब्बा उसे प्यार से समझाना चाहते हैं। किन्तु वे नही जानते कि लातों के भूत बातों से नही मानते।

20. सहज पके जो मीठा होय-(धीरे-धीरे किए जाने वाला कार्य स्थायी लदायक होता है)- विनोबा भावे का विचार था कि भूमि सुधार धीरे-धीरे और शान्तिपूर्वक लाना चाहिए क्योंकि सहज पके सो मीठा होय।

21. साँप मरे लाठी न टूटे-(हानि भी न हो और काम भी बन जाए)- घनश्याम को उसकी दुष्टता का ऐसा मजा चखाओ कि बदनामी भी न हो और उसे दण्ड भी मिल जाए। बस यही समझो कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

22. अन्त भला सो भला-(जिसका परिणाम अच्छा है, वह सर्वोत्तम है)- श्याम पढ़ने में कमजोर था, लेकिन परीक्षा का समय आते-आते पूरी तैयारी कर ली और परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसी को कहते हैं अन्त भला सो भला।

23. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए-(बहुत कंजूस होना)-महेंद्रपाल अपने बेटे को अच्छे कपड़े तक भी सिलवाकर नही देता। उसका तो यही सिद्धान्त है कि चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।

24. सौ सुनार की एक लुहार की-(निर्बल की सैकड़ों चोटों की सबल एक ही चोट से मुकाबला कर देते है)- कौरवों ने भीम को बहुत तंग किया तो वह कौरवों को गदा से पीटने लगा-सौ सुनार की एक लुहार की।

25. सावन हरे न भादों सूखे-(सदैव एक-सी स्थिति में रहना)- गत चार वर्षों में हमारे वेतन व भत्ते में एक सौ रुपए की बढ़ोत्तरी हुई है। उधर 25 प्रतिशत दाम बढ़ गए हैं-भैया हमारी तो यही स्थिति रही है कि सावन हरे न भागों सूखे।